डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान

प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के माध्यम से प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षकों के क्षमता विकास कार्यक्रम हेतु मैनुअल

राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद, छत्तीसगढ़
सर्व शिक्षा अभियान, छत्तीसगढ़

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत छत्तीसगढ़ के प्रारंभिक कक्षाओं में धीरे-धीरे बदलाव और सुधार की दिशा में हम आगे बढ़ रहे हैं | शालाओं में सीखने के वातावरण की दिशा में फोकस करने के बाद अब हम कक्षाओं में परिवर्तन पर फोकस कर रहे हैं | इस अभियान के माध्यम से हमने केवल कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों पर ही फोकस किया है और इन्ही को लेकर पूरे सत्र भर काम कर रहे हैं | कक्षाओं के आकलन के लिए हमने कुल दस दक्षताओं को फोकस किया था | प्रथम अकादमिक निरीक्षण में जिन शिक्षकों की कक्षाएं अपेक्षित मानकों में खरी नहीं उतरी, उन शिक्षकों की कक्षाओं को आगामी निरीक्षण के पूर्व मानकों पर खरे उतरने हेतु तैयारी के लिए इस क्षमता विकास कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है | आशा है कि आगामी निरीक्षण तक हम अपनी कक्षाओं को अपेक्षित मानकों के अनुरूप ढाल सकेंगे |

आमुख

विगत वर्षों में राज्य में शिक्षा गुणवत्ता पर फोकस करते हुए बहुत सारे कार्यक्रम प्रारंभ किए गए हैं | पढ़े भारत बढे भारत में शालाओं में प्रिंट रिच वातावरण से लेकर, राष्ट्रीय आविष्कार अभियान, शाला सिद्धि, विद्यान्जली के अंतर्गत शालाओं में सुधार के प्रयास लगातार किए जा रहे हैं | हम परिवर्तन के एक नए दौर से गुजर रहे हैं और नई शिक्षा नीति के लागू होने के बाद हमारे इन कार्यों को एक नई दिशा मिल सकेगी और राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेगा |

बच्चों के उपलब्धि में सुधार बिना कक्षा में परिवर्तन के संभव नहीं होगा | कक्षाओं में भीतर का पूरा दारोमदार हमारे शिक्षकों के हाथ में होता है | जब तक हम अपने शिक्षकों के मन में यह विचार नहीं ला पाएंगे कि जिन विधियों की बात हम अपने प्रशिक्षणों में कर रहे हैं, उनका कक्षा में इस्तेमाल करने से निश्चित रूप से बदलाव आयेगा, हम उनसे उनके कार्यों में परिवर्तन की अपेक्षा नहीं कर सकते | आज की तिथि में यही सार्थक बदलाव कर पाने का माद्दा हमारे प्रशिक्षणों के माध्यम से अपेक्षित है, आवश्यक है | और इसके लिए सबसे महत्वपूर्ण है कि हम प्रशिक्षण में उन बातों को ही साझा करें जो क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुरूप कक्षाओं में संभव हो सके, जिसे वर्तमान उपलब्ध संसाधनो एवं परिस्थितियों में संभव किया जा सके |

इसी मूलभूत उद्देश्यों को ध्यान में रखकर हमने राज्य में पहली बार शिक्षकों के क्षमता विकास का पूरा उत्तरदायित्व शालाओं के सक्रिय रूप से कार्य कर रहे प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के हाथों सौंपने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया है | हम यह मान रहे हैं कि प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी राज्य से उपलब्ध फ्रेमवर्क को अपनी स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार स्वयं बेहतर और प्रभावी डिजाइन तैयार कर कक्षाओं में लागू कर सकेंगे | इस बार हम आपको प्रशिक्षण के संचालन के लिए मोड्यूल न देते हुए एक मैनुअल उपलब्ध करा रहे हैं जिसमे प्रशिक्षण के संचालन के लिए मुख्य बिंदु मात्र दिए जा रहे हैं इसे अपने तरीके से प्रभावी बनाते हुए प्रशिक्षण कक्ष तक लेकर जाना और वहां से कक्षा तक ले जाने की जिम्मेदारी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी की होगी | वे आपस में अपने शिक्षक साथियों के साथ मेंटर के रूप में जुड़े रहेंगे और एक दूसरे से सीखने में सहयोग करेंगे |

शिक्षा में गुणवत्ता की दिशा में राज्य में राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद हमेशा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है | इसी दिशा में डॉ.एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत शिक्षकों के क्षमता विकास हेतु स्त्रोत व्यक्तियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम हमारी ओर से आयोजित किया जा रहा है और आगे भी अपेक्षित सहयोग दिया जाएगा ताकि हमारे कक्षाओं में चाहे गए बदलाव लाया जा सके | इस पुनीत कार्य में सभी जिलों में हमारे शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान हमेशा की भाँति महती भूमिका निभाएँगे और सभी प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आवश्यकता आधारित बनाते हुए शिक्षकों के क्षमता विकास की ओर विशेष ध्यान देंगे |

मुझे पूरा विश्वास है कि इस प्रशिक्षण में प्रशिक्षक दल पूरी तैयारी के साथ प्रशिक्षण देंगे एवं सभी आवश्यक संसाधन प्रशिक्षण केंद्र में व्यवस्थित रखेंगे | साथ ही सभी प्रतिभागी प्रशिक्षण स्थल में समय पर उपस्थित रहेंगे एवं पूरे समय सक्रिय रहकर प्रशिक्षण लेंगे एवं कक्षा में उनका उपयोग करेंगे |

आशा है कि इन सब प्रयासों से हम अपनी कक्षाओं में सार्थक बदलाव ला सकेंगे |

सुधीर अग्रवाल
संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद
छत्तीसगढ़, रायपुर |

अपनों से अपनी बात

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत हम प्रतिवर्ष सामाजिक अंकेक्षण के माध्यम से फोकस शालाओं का चयन कर उनके साथ पूरे सत्र भर कार्य करते हैं | गत वर्ष चयनित फोकस शालाओं में हमने शालाओं में अकादमिक माहौल बनाने हेतु सौ बिन्दुओं की चेक लिस्ट बनाकर दो बार जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों के माध्यम से अकादमिक निरीक्षण का कार्य संपन्न करवाया था | इस वर्ष चयनित फोकस शालाओं में हमने कक्षाओं को फोकस करते हुए प्रत्येक कक्षा का दस दक्षताओं के आधार पर अकादमिक निरीक्षण का कार्य किया | उन कक्षाओं को सफल कक्षाएं घोषित की गयी जिनमें तीन चौथाई अर्थात 75% बच्चे उनसे पूछे गए दस सवालों में से कम से कम सात सवालों के जवाब देने में समर्थ हों |

दो अकादमिक निरीक्षणों के बीच के समय में शिक्षकों की आवश्यकतानुसार क्षमता विकास हेतु कुछ इनपुट्स दिया जाना अत्यंत आवश्यक होता है ताकि दूसरे अकादमिक निरीक्षण में पहले की तुलना में कुछ सुधार दिखाई दे सके | गत वर्ष इस अभियान के माध्यम से हमने शिक्षकों को एक दूसरे से सीखने हेतु प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी बनाए जाने को प्रोत्साहित किया था और जिलों में शिक्षकों ने अपनी-अपनी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी बनाकर अकादमिक मुद्दों पर समझ बनाने का कार्य प्रारंभ किया है | राज्य परियोजना कार्यालय से प्रतिमाह चर्चा पत्र तैयार कर भेजे जाने से विभिन्न अकादमिक मुद्दों पर स्थानीय आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों के आधार पर अकादमिक चर्चाओं का दौर भी प्रारंभ हुआ है और धीरे-धीरे इन बैठकों में अकादमिक समझ बननी शुरू हुई है | इसी कार्य को आगे बढाने एवं सक्रिय प्रोफेशनल कम्युनिटी को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से इस बार का प्रशिक्षण कार्यक्रम जिलों में प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के माध्यम से करवाए जाने का निर्णय लिया गया है |

राज्य स्तर पर हम केवल पहले अकादमिक निरीक्षण के आधार पर क्षमता विकास के प्रमुख क्षेत्र एवं एक फ्रेमवर्क तैयार कर उपलब्ध करवा रहे हैं | जिलों में प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के सदस्य इस आधार पर विभिन्न सत्रों के आयोजन की जिम्मेदारी लेते हुए अपने अनुभवों एवं अध्ययन कर सत्र के लिए गतिविधियाँ स्वयं मिलकर डिजाइन कर सकेंगे | क्षमता विकास के दौरान स्थानीय परिस्थितियों के आधार पर सभी मिलकर अपने क्षेत्र के लिए योजना एवं रणनीति तैयार कर उनका क्रियान्वयन कर सकेंगे |

इस अभियान के अंतर्गत पहली बार हम प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के सदस्यों पर विश्वास कर प्रशिक्षण की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंप रहे हैं और हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारे साथी इस विश्वास को बनाए रखते हुए अपने स्तर पर पूरी तैयारी कर बेहतर से बेहतर प्रदर्शन कर कक्षाओं में बच्चों की उपलब्धि में सुधार हेतु शिक्षकों का क्षमता विकास कर सकेंगे और आगे के वर्षों में हमारे राज्य में शिक्षकों का क्षमता विकास प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के माध्यम से किया जा सकेगा |

(मो. अब्दुल कैसर हक़)
मिशन संचालक
राज्य परियोजना कार्यालय, सर्व शिक्षा अभियान
छत्तीसगढ़

इस प्रशिक्षण के बारे में...

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत द्वितीय वर्ष के प्रथम अकादमिक निरीक्षण के विश्लेषण में अपेक्षित मानकों में खरे न उतरी कक्षाओं के शिक्षकों के क्षमता विकास हेतु इस मैनुअल का विकास किया गया है | द्वितीय वर्ष के लिए अपेक्षित मानक इस प्रकार है-

"किसी कक्षा के तीन चौथाई अर्थात 75% बच्चे उनसे पूछे गए सत्तर प्रतिशत सवालों के जवाब दे सकने की स्थिति में हों तो उस कक्षा को सफल कक्षा माना जाएगा |"

राज्य में इस अभियान के अंतर्गत शिक्षकों का सतत क्षमता विकास किया जा रहा है | संकुल की मासिक बैठकों के लिए राज्य स्तर से नियमित रूप से चर्चा पत्र तैयार कर भेजा जाता है | शिक्षकों को एक दूसरे से सीखने के लिए प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी का सुझाव अमेरिका में इनस्टेप कार्यक्रम से दौरान समझकर राज्य में स्थानीय सुविधाओं के अनुरूप माडल विकसित कर लागू किया गया है | इस प्रशिक्षण के माध्यम से राज्य में पहली बार ऐसे सक्रिय प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी को सामने लाते हुए उनके माध्यम से शिक्षकों के क्षमता विकास का निर्णय लिया गया है | प्रत्येक विकासखंड से दो-दो कुशल पीएलसी सदस्यों को राज्य स्तर पर उन्मुखीकृत करते हुए उनके माध्यम से शिक्षकों का क्षमता विकास किया जाएगा | इन दो प्रशिक्षित सदस्यों को अपने पीएलसी से अन्य सक्रिय सदस्यों के साथ साथ अपने क्षेत्र में विशेषज्ञों को भी इस प्रशिक्षण में आमंत्रित करने की छूट होगी | वे शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे संस्थाओं को निर्धारित मुद्दों पर अपने विचार रखने, इस प्रशिक्षण में सहयोग करने हेतु आमंत्रित कर सकेंगे |

प्रशिक्षण की सफलता के लिए प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी को ये कार्य करने होंगे-

1. प्रशिक्षण के विषयवस्तु के अनुरूप विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण सत्रों के आयोजन के लिए कुशल टीम का गठन कर उन्हें जिम्मेदारी एवं तैयारी के साथ पर्याप्त अभ्यास करने हेतु जिम्मेदारी दें |
2. प्रशिक्षण के विभिन्न सत्रों के लिए आवश्यक सामग्री एवं सन्दर्भ साहित्य तैयार रखें |
3. प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी प्रशिक्षण के दौरान बताई गयी बातों को कक्षा में लागू होते हुए देखने एवं शिक्षकों को सतत समर्थन दिए जाने की व्यवस्था भी करेंगे |
4. शिक्षकों को चार दिवसीय प्रशिक्षण में आमंत्रित करते समय उन्हें निम्नलिखित सामग्री अपने साथ अनिवार्यतः लाने का अनुरोध करें – संबंधित कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकें, बच्चों की अर्ध वार्षिक परीक्षा की उत्तरपुस्तिकाएं, अपनी शाला में किए गए विभिन्न कार्यों के फोटोस एवं वीडियोज |

इस बार के शिक्षक क्षमता विकास की प्रमुख विशेषताएं :

- शिक्षकों के सतत क्षमता विकास माडल (Continuous Professional Development Model) पर आधारित
- विषय ज्ञान एवं पेडागोजी में गैप की जानकारी प्राप्त कर आवश्यकतानुसार सुधार हेतु इनपुट्स
- प्रशिक्षण के पूर्व एवं पश्चात नियमित फोलो अप एक्शन के साथ सेमीनार एवं कार्यशालाओं में सहभागिता
- एक दूसरे से सीखने एवं अनुभवी शिक्षकों से मेंटरिंग की व्यवस्था हेतु प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी
- शिक्षकों को आईसीटी के उपयोग हेतु सक्षम बनाना एवं प्रोत्साहित करना
- बच्चों की समस्याओं को समझने हेतु उनके उत्तर पुस्तिकाओं का प्रशिक्षण के दौरान विश्लेषण
- शिक्षकों की अकादमिक समस्याओं के हल के लिए विशेषज्ञ दल से जवाब दिए जाने की त्वरित व्यवस्था

प्रशिक्षण के पूर्व आवश्यक तैयारी:

डॉ. एपीजे अब्दुल कलम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत शालाओं से कुछ अपेक्षाएं की गयी हैं जिनके माध्यम से अपनी अपनी शाला में बच्चों की उपलब्धि में सुधार लाए जाने का प्रयास किया जा रहा है | अपनी शाला में किये जा रहे विभिन्न कार्यों एवं विडियोज तैयार कर शिक्षक प्रशिक्षण के दौरान सभी को अनिवार्यतः लाना होगा – इनमें से कुछ प्रयास इस प्रकार हैं –

शाला में प्रिंट रिच वातावरण/गणित किट का उपयोग/रीडिंग कार्नर का उपयोग/वाल मैगजीन/शाला का शैक्षिक वातावरण / शाला प्रबंधन समिति के साथ नियमित बैठक / माताओं का उन्मुखीकरण / विज्ञान के प्रयोग / बच्चों के सहयोग से किए जा रहे प्रोजेक्ट्स/ सामाजिक अध्ययन /एक दूसरे से सीखने हेतु छोटे-छोटे समूह में बिठाकर शिक्षण व्यवस्था आदि की फोटोज |

बच्चों द्वारा पुस्तकें पढ़ पाने, हाव-भाव के साथ गीत गा पाने, श्यामपट पर गणित के सवाल हल करने, शाला में किये गए नवाचार, शाला परिसर के सौन्दर्यीकरण के दृश्य, समुदाय का शाला में गुणवत्ता पर अभिमत आदि के कुछ उदहारण संबंधी वीडियोस

प्रशिक्षण पश्चात आवश्यक कार्य –

प्रशिक्षण के पश्चात सभी शिक्षकों को अपने अपने विषय के लिए व्हाटसएप्प समूह में शामिल होकर विषय में सतत सामग्री साझा करने एवं किसी एक विशेषज्ञ को मेंटर के रूप में पहचान कर उनसे सतत सहयोग लेना|

सभी शिक्षकों को उनके व्दारा पढाए जा रहे विषयों के आधार पर अध्यापन हेतु नोट्स एवं अभ्यास कार्य पूरा करना

शिक्षकों को विकासखंड स्तर पर चुने गए मुद्दों पर कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों का आयोजन

प्रशिक्षण के बाद कक्षाओं की मानिटरिंग –

प्रशिक्षण में बताए गए मुद्दों में से उन मुद्दों को जिन्हें उन्हें कक्षा में नियमित रूप से लागू करना होगा, की जानकारी तत्काल सभी मानिटरिंगकर्ताओं यथा संकुल समन्वयकों , ABEO, BRP, BRC,BEO, DEO को उपलब्ध करते हुए इन मुद्दों को कक्षा में लागू किया जाना एवं सतत समर्थन सुनिश्चित करना होगा | मानिटरिंग के दौरान शिक्षकों की अकादमिक समस्याओं को हल करने हेतु विशेषज्ञ दल के माध्यम से त्वरित जवाब चर्चा पत्र के माध्यम से दिए जाने की व्यवस्था |

प्रशिक्षण के सफल आयोजन हेतु Ground Rules

1. प्रशिक्षक दल समय से पूर्व पहुँच कर प्रशिक्षण की तैयारी, चर्चा एवं प्रशिक्षण कक्षा की व्यवस्था करेंगे |
2. सभी शिक्षक निर्धारित समय पर अनिवार्यतः प्रशिक्षण कक्ष में सक्रिय रूप से उपस्थित रहेंगे |
3. प्रशिक्षण के लिए निर्धारित सत्रों को समय पर समझ के साथ पूरा करने का प्रयास करें |
4. किसी दिन के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम उसी दिन संपन्न करवाएं, उसे अगले दिन के लिए न टालें |
5. समूह गतिविधियों के आयोजन के लिए आवश्यक अनुशासन एवं समय पालन सुनिश्चित करेंगे |
6. यदि किसी को शंका हो तो अपना हाथ उठाकर अनुमति मिलने पर ही अपनी बात संक्षिप्त में रखें |
7. प्रशिक्षण में सबका समय कीमती है अतः अनावश्यक मुद्दों पर समय व्यर्थ न करें |
8. प्रशिक्षण के दौरान मोबाइल पर बातचीत न करें और उसे सायलेंट मोड़ में रखें |
9. निर्धारित रूल्स को तोड़ने वालों के लिए आपसी सहमति से कोई सजा निर्धारित करें |
10. इसके अलावा अपनी आवश्यकतानुसार सबके विचार एवं सहमति से नियम बनाएं |

क्षमता विकास हेतु उपयोग में लाई जाने वाली विभिन्न प्रविधियां :

इस कार्यक्रम में परंपरागत व्याख्यान विधि का कम से कम उपयोग करते हुए अन्य विविध तरीकों का उपयोग कर कार्यक्रम को प्रभावी बनाने का प्रयास किया जाएगा | आवश्यकता, विभिन्न सत्रों में उपयोगिता, प्रभाविता के आधार पर निम्न में से कुछ प्रविधियों का उपयोग किया जाएगा:

1. Small Group Discussions	2 .Brain-storming	3. Case problems & case studies	4. Role Plays
5. Debate	6. Conver-Stations	7. Experiments cum demonstration	8. Data Analysis
9. Class-observations	10. Video clippings	11. Think-pair-share	12 .Conversation charts

प्रशिक्षण सत्र के आयोजन हेतु एक नमूना

प्रकरण: शाला में शैक्षिक वातावरण निर्माण हेतु दिए गए सुझावों पर क्रियान्वयन की स्थिति

अपनाई जानें वाली विधि: small group discussions **अनुमानित समय:** आधा घंटा

पूरी कक्षा से प्रश्न: शाला में शैक्षिक वातावरण बनाने हेतु कौन-कौन से प्रमुख सुझाव दिए गए हैं ?

अपेक्षित उत्तर: प्रिंट-रिच वातावरण, रीडिंग कार्नर, वाल मैगजीन, गणित किट का नियमित उपयोग, विज्ञान के प्रयोग, माताओं का उन्मुखीकरण, विभिन्न विषयों में प्रयोग, छोटे-छोटे समूह में बैठकर एक दूसरे को सहयोग करते हुए सीखना, सक्रिय पुस्तकालय आदि...

छोटे-छोटे समूह में कार्य: अब कक्षा को दो से चार के समूहों में बांटते हुए उन्हें अपने मोबाइल में अपने स्कूल में उक्त बिन्दुओं पर खीचे गए फोटो एवं वीडियो एक दूसरे को दिखाने को कहें | इस दौरान सुविधादाता विभिन्न समूहों में जाकर उनके मोबाइल में दिखाए जा रहे फोटोस एवं वीडियोज को भी देखें एवं अच्छे कार्यों को प्रोत्साहित करें |

व्यक्तिगत कार्य: एक दूसरे व्दारा किए गए कार्यों पर अभिमत देते हुए बेहतर कार्यों को अपनी शालाओं में किए जाने हेतु नोट करें |

फोलो अप कार्य: जिन शालाओं ने इन दिशाओं में कोई ठोस कार्य नहीं किया है, उन्हें प्रशिक्षण उपरान्त तत्काल इन कार्यों को करने हेतु प्रेरित करें |

प्रकरण: उच्च प्राथमिक शालाओं में प्रिंट-रिच वातावरण

अपनाई जानें वाली विधि: think pair share **अनुमानित समय:** आधा घंटा

प्रिंट रिच वातावरण क्या है ? बच्चों को किसी भाषा को सीखने हेतु उसका पर्याप्त एक्सपोजर होना अत्यंत आवश्यक है | बच्चों को अपने चारों ओर प्रिंट उपलब्ध कराने से बच्चों को उन्हें देखकर पढ़ने का अवसर मिल जाता है अन्यथा ग्रामीण अंचलों में बच्चों को पाठ्यपुस्तकों के अलावा लिखित सामग्री बहुत कम संख्या में ही उपलब्ध हो पाती है | इस कमी को दूर करने शाला परिसर में बच्चों को अपने चारों ओर लिखित सामग्री देखने से उनके पढ़ने की कौशल में अप्रत्याशित विकास हो पाता है |

व्यक्तिगत रूप से सोचने हेतु प्रश्न: आपकी शाला में प्रिंट रिच माहौल तैयार करने हेतु क्या-क्या उपाय किए गए हैं ? क्या-क्या किया जा सकता है ?

अपेक्षित उत्तर: पहले सभी को स्वयं अपनी शाला को ध्यान में रखते हुए उत्तर सोचने को कहें (think)
अब अपने पड़ोस के साथी से अपने विचार रखें एवं उनसे उनकी शाला में किए कार्यों की जानकारी लेवें (pair)
अब सभी से अलग-अलग उत्तर लेते हुए प्राप्त सुझावों की सूची श्यामपट में लिखें (share)

केस स्टडी:

बच्चों के साथ कार्य करते समय मैंने महसूस किया कि मेरे विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकों के अलावा कुछ ख़ास पढ़ने का अवसर नहीं मिलता | मुझे लगा कि पुस्तकों के अलावा भी दैनिक जीवन में काम आने वाली बहुत सारी बातें उन्हें सीखनी चाहिए ताकि पढ़ना सीखने के साथ-साथ उन्हें व्यवहारिक ज्ञान हो सके | मैंने घर से, अपने दोस्तों से और बच्चों से भी विभिन्न सामग्री जैसे पेस्ट, दवाइयां, बल्ब, खाने के सामान आदि के खाली अनुपयोगी कव्हर को जमा करना शुरू किया | इन्हें अपने कक्षा में बच्चों को पहले छोटे-छोटे समूह में और फिर धीरे धीरे व्यक्तिगत रूप से देते हुए उन्हें कुछ प्रशन्न बोर्ड में लिखकर उनके जवाब अपने खाली पैकेट से ढूंढकर लिखने का अवसर देना शुरू किया | प्रश्न जैसे सामग्री का नाम, उसका क्या उपयोग है, कीमत, टैक्स कितना है, एक्सपायारी तिथि, किस कंपनी ने बनाया है जैसे अनेक सवाल देते हुए उन्हें मजे से पढ़ने का अवसर देना शुरू किया | कुछ ही दिनों में मैंने देखा कि मेरे

बच्चों को अपनी पुस्तकें पढ़ने में भी मजा आने लगा और उनके पढ़ने की गति, किसी सवाल को ढूंढ पाने की क्षमता एवं समझ के साथ पढ़ पाना संभव हो सका |

सभी को यह केस स्टडी पढ़कर सुनाएं एवं पूछें कि क्या वे भी ऐसा कर सकते हैं और क्या इस प्रकार से कार्य करने में उनको कोई परेशानी होगी ? यदि आप इस केस स्टडी के आधार पर शाला में प्रिंट रिच वातावरण देना चाहते हैं तो इस स्टडी में क्या सुधार या बदलाव लाना चाहेंगे ?

फोलो अप कार्य: शिक्षक प्रशिक्षण के बाद अपनी अपनी शाला में प्रिंट-रिच वातावरण तैयार कर उपयोग पर सतत नजर रखना |

कार्यक्रम विवरण

#	सत्र	पृष्ठ	अनुमानित समय	सत्र संचालन टीम के सदस्यों के नाम
पहला दिन: पढ़े भारत बढे भारत				
1	शालाओं में प्रिंटरिच वातावरण-		एक घंटा	
2	कक्षा में स्थानीय भाषा का उपयोग		आधा घंटा	
3	भाषा सीखने से जुड़े कुछ मुद्दों पर चिंतन		एक घंटा	
4	वाचन के प्रकार		आधा घंटा	
5	भाषा से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर अभिमत		आधा घंटा	
6	चित्र पर चर्चा – पढ़ने की प्रक्रिया		पंद्रह मिनट	
7	भाषाई कौशलों के विकास हेतु कुछ गतिविधियाँ		एक घंटा	
8	पूरे दिन की गतिविधियों को कक्षा से जोड़ पाना		पंद्रह मिनट	
दूसरा दिन: राष्ट्रीय आविष्कार अभियान				
1	प्राथमिक कक्षाओं में गणित किट का नियमित उपयोग		एक घंटा	
2	बच्चों में मौखिक गणित हल करने के कौशलों का विकास		एक घंटा	
3	प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन		एक घंटा	
4	पर्यावरण शिक्षा से जुड़े कुछ मुद्दों पर चिंतन		एक घंटा	
5	विज्ञान शिक्षा में नवाचार		आधा घंटा	
6	गणित –विज्ञान एवं तकनीकी में विभिन्न प्रतियोगिताएं		पन्द्रह मिनट	
7	पूरे दिन की गतिविधियों को कक्षा से जोड़ पाना		पंद्रह मिनट	
तीसरा दिन: अपनी शाला को सिद्ध करना				
1	बच्चों की नियमित उपस्थिति		एक घंटा	
2	शिक्षण अधिगम एवं आकलन		आधा घंटा	
3	बच्चों की प्रगति का रिकार्ड एवं सुधार हेतु सतत प्रयास		आधा घंटा	
4	दक्षताओं के उदाहरण हेतु एक नमूना		आधा घंटा	
5	शिक्षकों का सतत क्षमता विकास		आधा घंटा	
6	बच्चों को सीखने के अवसर उपलब्ध कराना		आधा घंटा	
7	सभी के लिए शिक्षा चित्र पर चर्चा -		पन्द्रह मिनट	
8	शाला विकास योजना एवं उसके अनुरूप शाला में कार्य		आधा घंटा	

9	शाला का अपना विजन एवं मिशन स्टेटमेंट		आधा घंटा	
10	बच्चों में नागरिकता के गुणों का विकास		आधा घंटा	
11	पूरे दिन की गतिविधियों को कक्षा से जोड़ पाना		पन्द्रह मिनट	
चौथा दिन: सुधार के लिए कुछ पहल				
1	डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान		आधा घंटा	
2	प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी		आधा घंटा	
3	छोटे समूहों के साथ कार्य		एक घंटा	
4	आयोजन के आगे		आधा घंटा	
5	कक्षा में अनुशासन और प्रोत्साहन		आधा घंटा	
6	जिलों व्दारा किए जा रहे कुछ नवाचार		एक घंटा	
7	इस प्रशिक्षण के आगे क्या ?		एक घंटा	

पढ़े भारत बढे भारत

बच्चों में प्रारंभिक वर्षों में भाषाई कौशल विकसित करना अत्यंत आवश्यक है | इसे Early Grade Literacy कहा जाता है | भाषा सीखने से अन्य विषयों का सीखना भी आसान हो जाता है | इसलिए अन्य विषयों के शिक्षकों को भी बच्चों की भाषा पर ध्यान देना चाहिए | भाषा सीखते समय मुख्य रूप से सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना जैसे कौशलों पर ध्यान देना होता है | डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत शालाओं में इस दिशा में कार्य करने हेतु विभिन्न सुझाव दिए गए हैं | **ये कौन-कौन से सुझाव हैं, आपस में चर्चा कर सूची बनाएं |**

शाला में प्रिंट-रिच वातावरण, वाल मैगजीन, कहानी उत्सव, मुखौटों का उपयोग, कागज़ के खिलौने, चित्र पर चर्चा, नियमित श्रुत-लेखन, पुस्तकालय का उपयोग, स्थानीय भाषा में शिक्षा ....

अब इनमे से प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से चर्चा कर इन पर समझ बनाने का प्रयास करें |

शालाओं में प्रिंट-रिच वातावरण

शाला में प्रिंट-रिच वातावरण विकसित किए जाने हेतु आमतौर पर उपलब्ध 50 शब्दों की सूची आपस में शेयर करें | चर्चा पत्र के पुराने अंक में यह सूची उपलब्ध है | शिक्षकों को इसके उपयोग के बारे में यह मालूम होना चाहिए कि बच्चों को केवल यह मालूम होना चाहिए कि बच्चे किसी सामग्री को जिस नाम से पुकारते हैं, वही उसके बगल में लिखा हुआ है जैसे घंटी में घंटी लिखा होना | इस बात को समझ लेने पर वे शेष सभी वस्तुओं के लिखे नाम को पढ़ने का प्रयास करने लगते हैं जबकि उन्हें अभी वर्णों का ज्ञान भी नहीं होता | ऐसा करने से पढ़ना सीखना आसान हो जाता है और खुशी भी मिलती है |

बच्चों व्दारा ही चार्ट पेपर में प्रति माह अपने स्कूल के लिए नियमित मासिक वाल मैगजीन कैसे बनाना चाहिए, कहाँ लगाएं, संपादक मंडल, किस प्रकार की सामग्री आदि पर चर्चा आयोजित करें |

वाल मैगजीन के उपयोग से बच्चों में कौन-कौन से कौशल विकसित होने लगते हैं ?

कुछ स्कूलों ने "रोज एक कहानी" का सिलसिला चालू किया है | इन स्कूलों में रोज एक नई कहानी सुनाई जाती है | इससे भाषा सीखने के साथ-साथ और क्या लाभ हो सकता है ? स्थानीय बड़े-बुजुर्गों को स्कूल में आमंत्रित कर उनसे स्थानीय कहानियां सुनने की व्यवस्था की जा सकती है ? कितने लोगों ने यह प्रयास किया है ?

आपके व्दारा स्कूल में मुखौटे बनाकर उनसे की जा रही गतिविधियों की जानकारी साझा करें |

कागज़ के खिलौने बनाने का अवसर देते समय भाषा सीखने में कैसे मदद मिलती है ?

पुस्तकालय का नियमित उपयोग कैसे किया जा रहा है ? क्या आपकी शाला में बच्चों को पुस्तकालय के उपयोग के लिए अलग से कालखंड दिया गया है ? क्या कठिनाई के स्तर से अनुरूप किताबों को अलग-अलग कक्षाओं में अनुरूप पहचान चिह्न जैसे रंगीन स्लिप या पहचान चिह्न लगाया जा सकता है |

पुस्तकालय में बच्चों की रूचि एवं उनके स्तर के अनुरूप पढ़ने हेतु सामग्री की व्यवस्था के लिए क्या करना चाहिए ?

पुस्तकों को बच्चों की पहुँच में बनाए रखने के लिए क्या – क्या किया जाना चाहिए ?

कक्षा में स्थानीय भाषा का उपयोग

आमतौर पर कक्षा में कौन-कौन से शब्द या वाक्य बोले जाने होते हैं | क्या हम बच्चों को उनकी भाषा में कुछ सामान्य निर्देश दे पाते हैं ? यदि हम बच्चों को उनकी भाषा में बातचीत करने का प्रयास करें तो क्या फायदा होगा ? ऐसा करने के लिए आपको किस प्रकार के सहयोग की आवश्यकता होगी ?

शिक्षा के अधिकार क़ानून में बच्चों को उनकी भाषा में सिखाने हेतु क्या प्रावधान सुझाए गए हैं ?

आप सभी आपस में चर्चा कर कक्षा में आमतौर पर उपयोग में लाए जाने वाले शब्दों एवं वाक्यों की सूची बनाकर अपने आसपास के किसी ऐसे व्यक्ति जिन्हें वो भाषा आती हो या मिड डे मील बनाने वाले रसोइए से सहयोग लेकर इस प्रकार की एक सूची तैयार कर उन सभी प्रतिभागियों के साथ आपस में साझा करें जिनके यहाँ बच्चे उस भाषा का उपयोग करते हों | कक्षा में स्थानीय भाषा उपयोग कर बच्चों से बेहतर संबंध बनाए |

भाषा सीखने से जुड़े कुछ मुद्दों पर चिंतन

प्रोफ़ेशनल लर्निंग कम्युनिटी के कुछ सदस्यों को मुखौटों का उपयोग कर कुछ गतिविधियां करने के अवसर दें |

शाला में पढ़ने के लिए अतिरिक्त सामग्री का इंतजाम कैसे किया जा सकता है ? समाचार पत्र के बाल अंक शाला में कैसे उपलब्ध हो सकते हैं ?

कक्षा में सुनने, बोलने, लिखने एवं पढने के कौशलों के विकास के लिए कौन-कौन सी गतिविधियों का आयोजन किया जा सकता है ? चर्चा कर सूची बनाएं | इन्हें कक्षा में नियमित उपयोग के लिए तैयारी करें |

मात्राओं के अनुसार बोलने एवं लिखने का अभ्यास कैसे कराया जाना चाहिए ?

बच्चों को पत्र लिखना कैसे सिखा सकते हैं ? उनमे रूचि विकसित करने पोस्टकार्ड पर अपनी समस्या, सूचना या आमंत्रण आदि बच्चों के माध्यम से पोस्टकार्ड पर लिखवाने का प्रयास कर सकते हैं | पत्र के लिए विषय सूची आपस में चर्चा कर बनाएं | (कबीरधाम जिले में सभी बच्चों ने अपने घर में शौचालय बनाने हेतु पत्र लिखा था |)

अपने समुदाय से संबंधित समाचारों को एकत्रित कर शाला के बाहरी दीवार पर एक निर्धारित स्थान में बोर्ड बनाकर बच्चों के सहयोग से लिखवाएं | इससे बच्चों के साथ-साथ नव-साक्षरों को भी लाभ होगा |

कुछ चर्चित कहानियों में पत्र या घटना बदलकर बच्चों से आगे की कहानी सुनें | कहानी अधूरी रखते हुए उसे अपने अनुसार पूरा करने हेतु उचित अवसर देवें | डिक्शनरी का उपयोग बच्चों के साथ कैसे करना चाहिए ?

अपने आसपास लिखे हुए चीजों को पढ़ने की आदत डलवाएं | समाचार पत्र भी नियमित रूप से सभी बच्चे पढ़ें |

कविता अपने मन से पूरी करने, डिक्शनरी नियमित रूप से देखने, श्रुतलेख संबंधी कार्य, तस्वीर को देखकर कहानियां लिख पाना, रोल प्ले करना, अवलोकन करके किसी घटना पर नोट लिखना, आपस में एक दूसरे से इंटरव्यू के अवसर प्रदान करना, बच्चों को किसी बिंदु पर छोटे-छोटे मुद्दों पर संक्षिप्त नोट लिखना आदि |

वाचन के प्रकार (Types of Reading) - अपनाई जानें वाली विधि : Lecture cum demonstration

मुख्य रूप से वाचन चार प्रकार के होते हैं-

मुखर वाचन **(Reading Aloud)**

सह पठन **(Shared reading)**

जोड़ों में पठन **(Paired reading)**

स्वतंत्र पठन **(Independent reading)**

			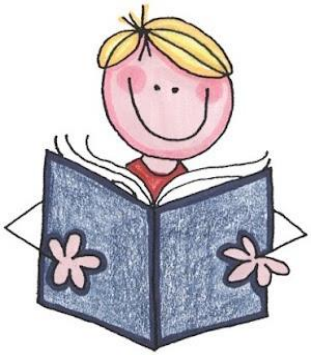
Reading aloud	Shared reading	Paired reading	Independent reading

मुखर वाचन-कक्षा में सभी बच्चों के सामने शिक्षक व्दारा पाठ को जोर-जोर से पढ़कर सुनाना |

सह पठन –इसमें किसी पाठ को शिक्षक बच्चों के साथ मिलकर उन्हें दिखाते हुए पढता है | यह मुख्यतः बड़ी पुस्तकों की मदद से होता है जिसे शिक्षक एवं बच्चे एक साथ देख सकें |

जोड़ों में पठन- इसमें कक्षा में बच्चे जोड़ी में बैठते हैं और दो-दो लोग मिलकर किसी सामग्री को पढ़ते हैं |

स्वतंत्र पठन- इस प्रकार में बच्चे स्वतंत्र रूप से अपनी पुस्तक पढ़ते हैं |

शिक्षकों के साथ मिलकर प्रत्येक प्रकार पर विस्तार से चर्चा करते हुए प्रदर्शन करके दिखाएं |

भाषा से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर अभिमत

इन मुद्दों पर शिक्षकों के समूह में चर्चा आयोजित करवाते हुए निकले मुख्य विचार सबके साथ साझा करें-

1. भाषा को सुनते-सुनते ही बच्चे उसके नियम वगैरह सीख लेते हैं |
2. त्रुटियाँ बच्चों के सीखने की प्रक्रिया का स्वाभाविक और अस्थाई चरण होती है |

चित्र पर चर्चा – पढ़ने की प्रक्रिया

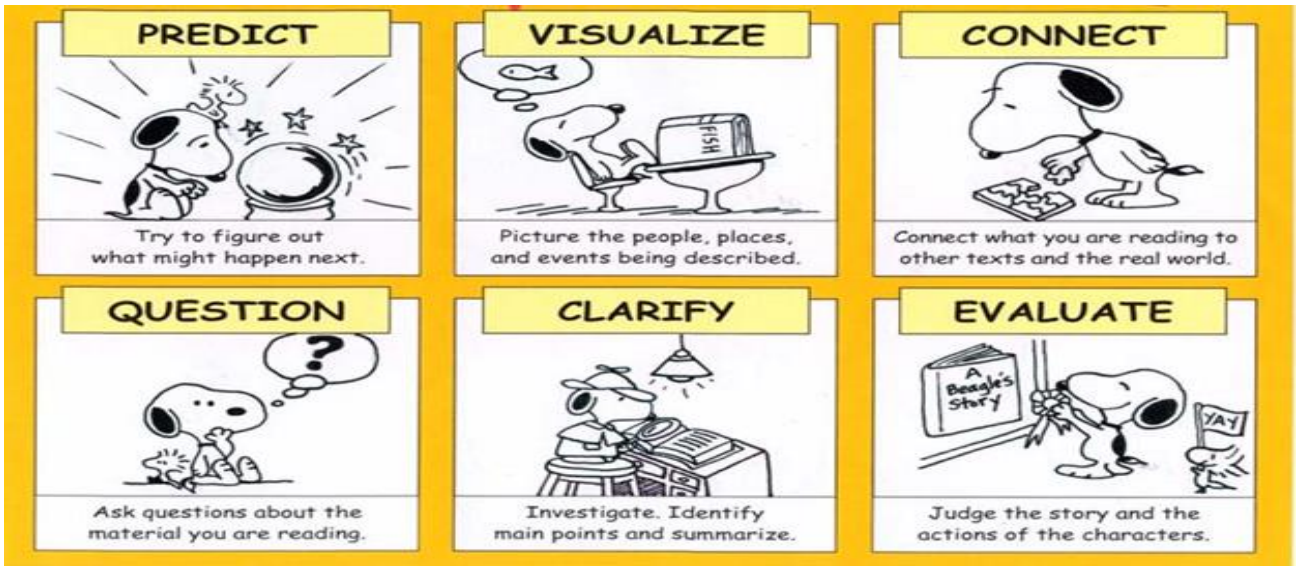

भाषाई कौशलों के विकास हेतु कुछ गतिविधियाँ-

1. **Who am I?**-किसी एक बच्चे के पीठ पर कोई नाम लिख दें | अब उस बच्चे को बाकी से हाँ या नहीं वाले कुछ प्रश्न पूछकर दस प्रश्नों के भीतर उसके पीठ में लिखे सही नाम को पहचानने का अवसर देवें |
2. **What is in my hand?** अपने हाथ में कोई वस्तु छिपाकर बच्चों से पूछें कि उनके मुट्ठी में क्या है ?
3. **Who am I?** किसी का अभिनय कर बच्चों को बताने को कहें कि आप कौन हैं ?
4. किसी शब्द को लिखकर उस शब्द में लिखे सभी वर्ण से शुरू होने वाले नए शब्दों को बोलने का अवसर देना जैसे QUALITY लिखने में उपयोग में लाए गए प्रत्येक वर्ण से शुरू होने वाले शब्द बोलें |
5. **Repeated Question**-किसी एक प्रश्न को बार-बार पूछकर उसके सभी संभावित उत्तर बताने का अवसर दें जैसे Why do you go to School? Because it is good. Teachers are good. I like my school. I have friends in school……
6. **Speed up**-बच्चों को कुछ नए शब्द बोलें और उन्हें उसका अर्थ डिक्शनरी से देखकर जल्दी से जल्दी लिखने को कहें | जो जल्दी ढूंढकर लिखेगा वही जीतेगा |
7. **Gesture game**-बहुत सारे emotions जैसे angry, happy, sad, dancing, cleaning, sleepy, afraid, hair brushing जैसे कार्यों का अभिनय करते हुए बच्चों से पूछे कि वे क्या कर रहे हैं ?
8. **Last letter**-एक कागज़ को गेंद के जैसे एक दूसरे की ओर फेंककर कोई शब्द बोलकर खेल शुरू करें और उस शब्द के अंतिम वर्ण से अगला शब्द बोलकर अत्यांक्षरी खेलें | Good, Den, Nest, Time, Eye, Ear, Ring..
9. **Dicto Gloss**-इसमें आप एक वाक्य पढ़ें | बच्चों के छोटे-छोटे समूह उनमे से एक दो शब्दों को लिखें | एक छोटे समूह के बच्चे अलग-अलग हिस्सों के शब्द सुनकर लिखेंगे | वाक्य बोलने के बाद उन्हें इन शब्दों को सही क्रम में जमा कर बोले गए वाक्य के अनुसार सही क्रम में वाक्य लिखें |
10. **Simon says**-आप Simon says के बाद कोई क्रिया जैसे jump, run, sit, laugh, cry बोलें और सभी बच्चे आपकी बात को सुनकर वैसे ही एक्शन करें |

प्रतिभागियों को अगले दिन के लिए कार्य-

सभी शिक्षकों से अपने बारे में, अपनी सोच एवं एक शिक्षक के रूप में अपने विद्यार्थियों, अपने जॉब, अपनी भावनाओं, अपने भविष्य की योजनाओं के बारे में कम से कम एक पेज सोचकर अपनी आत्मकथा लिखकर लाने को कहें |

प्रशिक्षण के पहले दिन के आधार पर शिक्षकों के पास होना चाहिए –

1. अपनी शाला को प्रिंट-रिच बनाने हेतु पूरी जानकारी एवं योजना
2. बच्चों में भाषाई कौशल विकसित करने हेतु विभिन्न गतिविधियों की सूची
3. पढने के विभिन्न तरीकों की जानकारी
4. अपने क्षेत्र की भाषा में कक्षा में आमतौर पर उपयोग में लाए जाने वाली शब्दावली एवं वाक्यों की डिक्शनरी
5. स्वयं के बारे में जानने हेतु चिंतन का अवसर एवं अपनी स्वयं की आत्मकथा

इनमे से कक्षा में आप क्या क्या ले जाना चाहेंगे, इस पर चिंतन करवाएं |

राष्ट्रीय आविष्कार अभियान

इस अभियान का मुख्य उद्देश्य बच्चों में गणित, विज्ञान एवं टेकनोलोजी के उपयोग के प्रति रूचि विकसित करते हुए उन्हें स्कूल में पढाए जाने वाले इन विषयों को अपने आसपास एवं दैनिक जीवन से जोड़ते हुए विषय-वस्तु को आनंददाई तरीके से सीखते हुए नवाचार करने हेतु प्रेरित हो सके |

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत राज्य की शालाओं में गणित, विज्ञान एवं टेक्नोलोजी को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न कार्य किए गए हैं | इनमे से कुछ प्रमुख कार्य इस प्रकार है:

- सभी प्राथमिक शालाओं में संपर्क स्मार्ट गणित किट उपलब्ध कराते हुए शिक्षकों का प्रशिक्षण
- विज्ञान को रुचिकर बनाने हेतु चर्चा पत्रों के माध्यम से विभिन्न प्रयास
- इग्नाईट अवार्ड का व्यापक प्रचार-प्रसार एवं देश भर से कुल 55 हजार प्रविष्टियों में से 28 सफल बच्चों में से तीन छत्तीसगढ़ राज्य से
- विज्ञान विषय में जानकारियों के आदान-प्रदान के लिए जिलों में प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी
- शिक्षकों के प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी को आपस में जुड़ने विभिन्न सोशियल मीडिया का उपयोग
- राज्य स्तर से अकादमिक चर्चाओं हेतु चर्चा पत्र तैयार कर सीधे संकुल तक भेजने तकनीकी का उपयोग
- गणित एवं विज्ञान की पुस्तक के उपयोग के लिए गतिविधि बैंक एवं ई-बुक के रूप में उपलब्ध

आपके आसपास इन विषयों में सुधार हेतु क्या-क्या प्रयास किए जा रहे हैं ? चर्चा करें |

प्राथमिक कक्षाओं में गणित किट का नियमित उपयोग- प्रशिक्षण स्थल पर निकट के प्राथमिक शाला से एक किट लाकर उसके उपयोग में किसी को शंका हो तो पूछकर इसका समाधान करें | गणित किट के नियमित उपयोग की स्थिति पर फीडबैक लेवें एवं सभी को इसके नियमित उपयोग हेतु प्रेरित करें | इस किट के उपयोग में प्रशिक्षित एवं कुशल शिक्षक को ही यह सत्र सौंपे |

राज्य स्तर से इसकी मानिटरिंग एवं प्रतिदिन काल सेंटर से सीधे शालाओं से संपर्क किए जाने की भी जानकारी देवें | प्रतिमाह जिलेवार गणित किट के उपयोग की स्थिति की समीक्षा कर रैंकिग की व्यवस्था भी की गयी है | इस कार्यक्रम के

क्रियान्वयन से यह अपेक्षा है कि बच्चों में गणितीय कौशलों में आशातीत सुधार होगा | इस हेतु इस बात का विशेष ध्यान रखें कि कहीं भी किसी भी स्थिति में किट बिना उपयोग के न रहें |

बच्चों में मौखिक गणित हल करने के कौशलों का विकास- बच्चों में मौखिक गणित के कौशलों में अपेक्षित विकास अत्यंत आवश्यक है | यह कौशल सभी के लिए दैनिक जीवन में बहुत उपयोगी होता है |

गणित में कक्षावार मौखिक कौशलों की जांच कैसे करेंगे ?

गतिविधि: कक्षावार मौखिक गणित कौशल विकास हेतु अभ्यास के प्रश्न तैयार करना एवं क्विज प्रतियोगिता |

- उपस्थित प्रतिभागियों को पांच समूहों में बाँटते हुए प्रत्येक समूह को एक एक कक्षा की जिम्मेदारी देवें |
- प्रत्येक समूह अपनी अपनी कक्षा के लिए कम से कम बीस प्रश्न तैयार करेंगे और आपस में शेयर करेंगे |
- प्रतिभागी दो समूहों में बंटकर एक दूसरे से मौखिक सवाल पूछेंगे एवं प्रत्येक सवाल के लिए एक मिनट अधिकतम समय देते हुए एक दूसरे से जवाब की प्रतीक्षा करते हुए खेल को जारी रखेंगे |

प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन- प्राथमिक स्तर पर शरुआती वर्षों में पर्यावरण विज्ञान अलग से विषय न होकर भाषा एवं गणित में समाहित होता है |इस स्तर पर आपको इन विषयों में ऐसे क्षेत्र खोजने होंगे जिनमें कुछ रूककर आप पर्यावरण के बारे में चर्चा कर सकें | एक विषय सिखाते समय उसी के साथ जब किसी अन्य विषयों को जोड़ने का अवसर मिल सकता है तो ऐसे बिन्दुओं को प्लग पायंट्स कहते हैं | जैसे यदि आवागमन के विभिन्न साधनों के नाम पढ़ने एवं लिखने का अभ्यास हिन्दी में कराना है तो उसी बिंदु पर हम पर्यावरण से जुड़े विभिन्न मुद्दों जैसे जानवरों की मदद से चलने वाले वाहन, पेट्रोल, डीजल, गैस से चलने वाले वाहन, गति के अनुसार वाहन, यात्रियों के बैठ सकने के आधार पर वाहन, हवा, पानी, सड़क पर चलने के अनुसार वाहनों का वर्गीकरण, वाहनों से प्रदूषण जैसे बहुत से मुद्दों पर चर्चा की जा सकती है |

कक्षा एक एवं दो की पाठ्यपुस्तक में देखें कि किन किन जगहों में पर्यावरण में बातचीत हो सकती हैं ? उदाहरण ढूंढकर आपस में साझा करें और किस प्रकार से ऐसे प्लग पायंट्स में चर्चा की जा सकती है, देखें |

पर्यावरण अध्ययन वास्तव में अपने चारों ओर हो रही घटनाओं का अध्ययन है | बच्चों को इन विषयों में रूचि विकसित करने हेतु किस प्रकार के कौशलों का विकास होना आवश्यक है ?

अवलोकन करने का कौशल / जिज्ञासा/ खोजी प्रवृत्ति का विकास/ किसी घटना के होने पर प्रश्न पूछना/ करके सीखना / किसी बात को साबित कर पाना और .....

पर्यावरण अध्ययन में कौन-कौन से प्रमुख प्रसंग शामिल हैं ? प्रश्न पूछकर सभी से जवाब लेवें |

कुछ प्रसंग इस प्रकार हैं – रिश्ते-नाते, रोजगार, जीव-जंतु, खेल, पेड़-पौधे, मौसम, भोजन, हवा, पानी, आवास, यात्रा, नक्शा, त्यौहार, स्वच्छता, रोग, मिट्टी आदि ...
किसी एक बिंदु को आधार बनाकर आप गतिविधियाँ डिजाइन कर सकते हैं जैसे उदाहरण के लिए त्यौहार पर हम इन मुद्दों पर चर्चा कर सकते हैं –

राष्ट्रीय त्यौहार / सामाजिक आस्थाओं से जुड़े त्यौहार/ फसलों से जुड़े त्यौहार/ ऋतुओं से संबंधित त्यौहार/ विभिन्न त्यौहार के दौरान बनाए जाने वाले पकवान/ त्यौहार के दौरान पहने जाने वाले ख़ास कपडे/ गाए जाने वाले ख़ास गीत/ ख़ास नृत्य/ त्यौहार मनाने का तरीका/ त्यौहारों का महत्व/ त्यौहारों पर लगने वाले मेले

प्रतिभागियों को समूह में बांटकर कार्य करने हेतु निम्नलिखित मुद्दे देवें और उन्हें अलग-अलग समूह में कार्य कर आपस में साझा करने हेतु प्रेरित करें –

समूह एक- अपने आसपास कौन-कौन से अंधविश्वास प्रचलन में हैं ? इन अंधविश्वासों के पीछे क्या कारण हो सकते हैं ? इस प्रकार की स्थितियों को कैसे सुधारा जा सकता है ?

समूह दो- परिवेश में हो रही किस प्रकार की घटनाओं को बच्चों को अवलोकन करने हेतु कहा जा सकता है ?

समूह तीन- हमारे आसपास किन वजहों से पर्यावरण में प्रदूषण फ़ैल रहा है ? इस समस्या से कैसे बचा जा सकता है ? हमारे पास उपलब्ध स्त्रोतों / संसाधनों को कैसे सुरक्षित रखा जा सकता है ?

समूह चार- कौन-कौन सी प्राकृतिक आपदाएं हमारे जीवन में आ सकती हैं ? इनसे कैसे बचा जा सकता है ?

समूह पांच- हमारी परंपराओं / संस्कृति में/ मान्यताओं में कौन-कौन से तथ्य विज्ञान पर आधारित हैं ?

प्रतिभागी अपने अपने समूहों में काम करने के बाद दूसरे समूहों में भी जाकर अपने अनुभवों एवं ज्ञान के आधार पर उनकी सूची में बढ़ोत्तरी में योगदान दें | बाद में सभी प्रतिभागी सभी समूहों में एकत्र जानकारी आपस में साझा करे |

विज्ञान शिक्षण के माध्यम से बच्चों में तर्क शक्ति, खोजी एवं जिज्ञासु प्रवृत्ति, अवलोकन की क्षमता, सूझ-बूझ के कौशल, मन में उठने वाले प्रश्नों के जवाब ढूंढ पाने की इच्छाशक्ति और भी न जाने इतने कौशलों का विकास किया जाना होता है | पाठ्यपुस्तक में दिए तथ्यों को पढ़ा देना या सिखा, रटा देना मात्र ही विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य नहीं है | हम शिक्षकों को यह समझना होगा कि विज्ञान शिक्षा का उद्देश्य इससे कहीं आगे है |

प्रतिभागियों के साथ पाठ्यपुस्तक पर आधारित **कम से कम दस विभिन्न प्रयोग प्रदर्शन** कर समझाने हेतु इस प्रक्रिया को अपनाएं –

प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के सदस्य स्वयं के व्दारा बनाए गए विभिन्न प्रयोगों को एक के बाद एक प्रतिभागियों को दिखाएं | कुछ प्रतिभागियों को भी अपने प्रयोगों को दिखाने का अवसर देवें | कोशिश करें कि चुने गए प्रयोग ऐसे हों जिसे आसानी से अपने आसपास उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कर कक्षा में किया जा सके | इस प्रकार इस प्रशिक्षण के माध्यम से सभी शिक्षकों को कम से कम दस प्रयोग देखने एवं अपनी शाला में स्वयं करने हेतु क्षमता विकसित हो जाए |

पर्यावरण शिक्षा से जुड़े कुछ मुद्दों पर चिंतन -

इन मुद्दों पर **ब्रेनस्टोर्मिंग** करते हुए कक्षा में किए जाने योग्य उपायों की सूची बनाएं-

- कक्षा में पाठों के आधार पर बच्चों से कौन-कौन से माडल बनाए जा सकते हैं ?

- मशीने कैसे काम करती हैं ? इसे समझाने के लिए कौन-कौन से मशीनों के उदाहरण दिए जा सकते हैं ?
- मोबाइल से कैसे कैश ट्रांसेक्शन होता है और इसे सीखना क्यों आवश्यक है ?
- यदि आप अपनी शाला में उपलब्ध संसाधनों से विज्ञान प्रयोगशाला बनाना चाहते हैं तो यह कैसे संभव होगा ?कबाड़ से जुगाड़ कर आप क्या क्या कर सकते हैं ?
- हमारे आसपास विभिन्न घटनाएं क्यों होती है, इस पर चर्चा हेतु कुछ घटनाओं की सूची एवं कारणों की जानकारी प्राप्त करें जैसे ठंड के दिनों में मुंह से भाप क्यों निकलता है आदि आदि |
- कक्षावार विद्यार्थियों से हम किन-किन मुद्दों पर सर्वे कर आंकड़ों का संग्रहण एवं उपयोग करवा सकते हैं ?
- बच्चों को कक्षा से संबधित कौन से ऐसे प्रकरण हैं जिसमे उन्हें करके देखने के अवसर दिए जा सकते हैं ?
- बच्चों में गणित, विज्ञान में रूचि कैसे विकसित की जा सकती है ?
- कक्षा में तकनीकी का उपयोग कैसे और किन-किन क्षेत्रों में किया जा सकता है ?

विज्ञान में नवाचार

विज्ञान को रुचिकर बनाने शाला में रंगोली बनाने के साथ साथ विज्ञान की समझ भी विकसित करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है |

अपने आसपास हो रहे विभिन्न नवाचारों को शेयर करें |

विभिन्न शैक्षणिक वेबसाइट्स एवं उनका उपयोग-

प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी अपनी जानकारी में इंटरनेट पर जो भी सामग्री या वेबसाइट्स उपलब्ध हो सकते हैं, उनकी आपस में शेयरिंग करें | सभी शिक्षक इन वेबसाइट्स के अलावा कुछ शैक्षिक ब्लोग्स से भी जुड़ें |

गणित –विज्ञान-तकनीकी में विभिन्न प्रतियोगिताएं

प्रतिभागियों को इन क्षेत्रों में उपलब्ध विभिन्न प्रतियोगिताओं की जानकारी दें |
इस वर्ष हमारे राज्य से इग्नाईट अवार्ड प्राप्त बच्चों व्दारा सुझाए गए तकनीकों का विवरण-

सुकमा, छत्तीसगढ़ के बालक रोशन सोढी ने शिक्षकों को वोटिंग मशीनों को लूटने के घटना के बारे में चर्चा करते सुना | तब उसके दिमाग में यह विचार आया कि जब हम वोट डालने बटन दबाएँ तो वोट सीधे केंद्र में चला जाए और वहीं गिनती हो जाए | मशीन ले जाने की जरूरत न पड़े |

दंतेवाडा की इंदु स्वच्छता अभियान के प्रति काफी सजग है | उसने जब अपने गाँव में शौचालयों के सेप्टिक टैंक को ओवरफ्लो होकर बहते देखा तो उसे यह विचार आया कि यदि हमको सेप्टिक टेंक भरने से पहले ही कोई अलार्म के माध्यम से पता चल जाए कि टैंक भरने वाला है तो उसे समय रहते खाली करवाया जा सकता है |

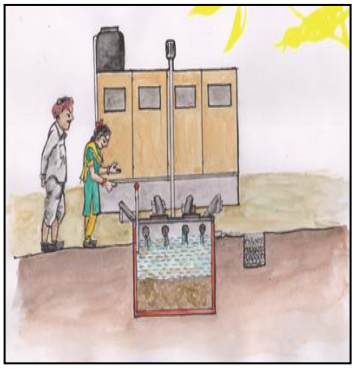

जांजगीर के हिमांशु रतेरिया के दादा-दादी को टीवी देखने का बहुत शौक है पर इस शौक के चलते वे समय पर दवाई खाना भूल जाते हैं | इस समस्या के हल के रूप में हिमांशु के दिमाग में यह ख़याल आया कि यदि टीवी में ही ऐसा कोई अलार्म लग जाए जो समय पर दवाई खाने की याद दिला दे तो भूलने के झंझट से मुक्ति मिल सकती है |

इस अवार्ड में शामिल होने की प्रक्रिया बहुत ही आसान है |http://nif.org.in/igniteवेबसाईट में आपको सभी जानकारियाँ मिल जाएगी एवं विगत वर्षों में किस प्रकार के प्रविष्टियों को अवार्ड मिला है, यह भी पता चल सकेगा | आप बच्चों को प्रोत्साहित करें ताकि वे ऐसे नवाचारी उपाय सोच सकें | और भी उदाहरण वेबसाईट देखकर शेयर करें |

अपनी शाला को सिद्ध करना

जो शालाएं अपने स्तर पर स्वयं के सुधार के लिए सक्रिय रहती हैं और हमेशा बेहतर प्रदर्शन करना चाहती हैं, उनके लिए शाला सिद्धि कार्यक्रम एक मार्गदर्शक के रूप में आगे बढ़ने के लिए अवसर प्रदान करता है | इसलिए राज्य में गत वर्ष डॉ.एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत सामाजिक अंकेक्षण में बेहतर प्रदर्शन करने वाली शालाओं को इस कार्यक्रम से जोड़ने की पहल की गयी है | इस कार्यक्रम के अंतर्गत शालाओं में अपेक्षित सुधार के कुछ प्रमुख क्षेत्रों की जानकारी आपके साथ साझा की जा रही है |

बच्चों की नियमित उपस्थिति:

आप यह मानते होंगे कि जितना क्वालिटी समय बच्चे शाला में दे सकेंगे उतना ही सीखना संभव हो सकेगा | ऐसी स्थिति के लिए क्या आपको कुछ मुहावरें याद आ रहे हैं ? जैसे – "जो सोना जितना तपता है वो उतना ही अच्छा होता है |" ऐसे ही और कुछ मुहावरें सोचें .....

सीखने-सिखाने के लिए अधिकतम समय देने के लिए हमें इन बातों को ध्यान में रखना होगा-

- पूरे सत्र में शाला लगने के कुल दिवस
- प्रतिदिन शाला लगने की कुल अवधि
- प्रतिदिन कक्षा लगने की कुल अवधि
- शाला से बाहर सीखने का समय
- अवकाश के दिनों में सीखने के अवसर उपलब्ध कराना

अब सभी मिलकर अपने अपने अनुभव के आधार पर निम्नलिखित बिन्दुओं पर गणना करें-

कुल 365 दिनों में से कितने दिन शाला लगती है ? शाला लगने वाले कुल दिनों में से कितने दिन आपको अन्य विभिन्न कार्यों से बाहर जाना पड़ता है ? इतने दिनों को कुल लगे दिनों से घटा लेवें | अब कौन सी संख्या आई ? अब प्रतिदिन कुल कितने घंटे शाला लगती है ? इसे पिछली संख्या से घटा लेवें और देखें कि कुल 365 दिनों में से कितने दिन और कितने घंटे वास्तव में शाला लगती है ?

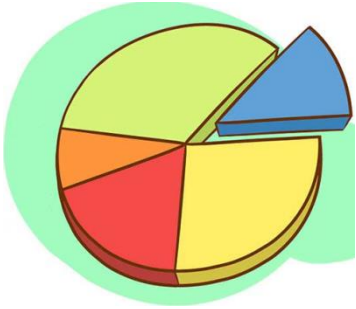

अब सभी को स्वयं इस मुद्दे पर चिंतन करने का अवसर देवें –

- प्रतिदिन आप विभिन्न कार्यों के लिए कितना समय देते हैं ?
- एक गोल घेरे में विभिन्न कार्यों के लिए प्रत्येक कार्य के प्रतिशत के अनुसार हिस्सा तय कर प्रदर्शित करें |
- प्रतिदिन शाला लगने की कुल अवधि (घंटों में)
- आप अध्यापन के अलावा अन्य कार्यों के लिए कितना(कार्य का उल्लेख करें) ? कितना समय देते है %
- बच्चों को पढ़ाने में कितना वास्तविक समय दे पाते हैं ?

इसी प्रकार इस बात को देखने का प्रयास करें कि प्रतिदिन आप बच्चों को कितने समय शाला में एवं शाला के बाहर सीखने-सिखाने में सक्रिय रखने का प्रयास करते हैं ? इसके लिए क्या-क्या योजना बनाते हैं ? अब अपनी कक्षा के अनियमित बच्चों के बारे में सोचना शुरू करें -

- शाला लगने के दिनों में कितनें बच्चे नियमित रूप से उपस्थित रहते हैं ?
- ऐसे कौन-कौन से बच्चे हैं जो शाला में नियमित रूप से नहीं आते ?
- ये बच्चे क्यों अनियमित हैं, क्या आपने यह जानने का प्रयास किया है ?
- क्या आपने इन्हें नियमित करने के लिए कुछ प्रयास किया है ? क्या ये सफल हो पाए हैं ?
- लंबी अवधि में अवकाश पर जाने वाले विशेषकर पलायन के दिनों में स्कूल नहीं आने वाले बच्चों की पढाई के नुकसान को कैसे पूरा कर पाते हैं ?
- ऐसे बच्चों को नियमित करने हेतु क्या आपने कभी कुछ अलग हटकर सोचा है ?
- माह दिसंबर, 2016 के अंक में ऐसे बच्चों के साथ काम करने हेतु प्रस्तावित एक्शन रिसर्च पर चर्चा करें |

बच्चों को पढ़ाने के समय एवं उनकी नियमित उपस्थिति को कैसे बढाया जा सकता है, इस मुद्दे पर चर्चा करें | बच्चों को क्वालिटी टाइम देने हेतु हम सबको संवेदनशील होना होगा | अपनी अपनी शाला में Time on task बढाने हेतु विभिन्न उपायों पर चर्चा आयोजित करें |

क्या आपको अपनी शाला में बच्चों की उपस्थिति दर निकालना मालूम है ?
इस हेतु आपको इस सूत्र का इस्तेमाल करना होगा-

$$\text{वार्षिक औसत उपस्थिति} = \frac{\text{सभी विद्यार्थियों की वार्षिक उपस्थिति का योग}}{\text{कुल विद्यार्थी}}$$

$$\text{उपस्थिति दर} = \frac{\text{वार्षिक औसत उपस्थिति}}{\text{वर्ष में शाला लगने के कुल दिवस}} \times 100$$

एक उदाहरण से इसे समझने का प्रयास करें-

कक्षा 1 के बालक विद्यार्थियों की वार्षिक उपस्थिति दर निकालने हेतु उदाहरण

कक्षा 1 उपस्थिति माह जून							कुल शाला लगने के दिवस	विद्यार्थी कुल उपस्थिति
क्र	नाम	दिनांक	दिनांक	दिनांक	दिनांक			
		1	2	...29	.. 30			
1	सोहन	उप	अनु	अनु	उप		22	18
2	श्याम	उप	उप	उप	अनु		22	19
..	..	..	..	..	..			...
25	..	..	..	..	..		22	...
26	रमेश	अनु	उप	उप	अनु		22	16
							कुल	385

माह जून में शाला लगने के दिवस 22
माह जून में कक्षा 1 के 26 बालक विद्यार्थी की कुल उपस्थिति 385
इसी प्रकार माह जुलाई में शाला लगने के दिवस 21
माह जुलाई में कक्षा 1 के बालक विद्यार्थी की कुल उपस्थिति 416
अतः माह जून 15 से अप्रैल 16 तक कक्षा 1 के कुल बालक विद्यार्थी उपस्थिति का योग = 385 + 416 + ...+ ..... = 3896
माह जून15 से अप्रैल16 तक शाला लगने के कुल दिवस = 22 + 21 + ... = 195
अतः कक्षा 1 के बालकों की वार्षिक उपस्थिति दर होगी =

$$\text{कक्षा 1 बालक वार्षिक उपस्थिति दर} = \frac{\text{वार्षिक औसत उपस्थिति} = \frac{3896}{26}}{195} \times 100$$

$$\text{कक्षा 1 बालक वार्षिक उपस्थिति दर} = \frac{149.84}{195} \times 100$$

कक्षा 1 बालक
वार्षिक उपस्थिति दर = 76.84

आगे हमें नियमित रूप से बच्चों की उपस्थिति दर में सुधार करने की आवश्यकता है | अतः इस सूत्र की सही जानकारी प्राप्त कर पर्याप्त अभ्यास करवाते हुए समझ विकसित करें |

शिक्षण अधिगम एवं आकलन

क्या आप वो सब कर रहे हैं जो एक शिक्षक से अपेक्षित है ? वो सब कौन से कार्य हैं जिनके करने से शाला में आपका प्रभाव बढ़ सकता है ? अपने काम के प्रभाव को बढाने के लिए क्या-क्या किया जाना चाहिए ? आपको इन मामलों में सही दिशा में सोचने हेतु यहाँ कुछ चेक लिस्ट दिए जा रहे हैं | प्रशिक्षण कक्ष में सुविधादाता से अनुरोध है कि इन कार्यों को एक चेक लिस्ट के रूप में श्यामपट या प्रोजेक्टर से प्रतिभागियों को दिखाएं-

1. क्या आप बच्चों के पालकों एवं समुदाय से चर्चा कर बच्चों की सामाजिक सांस्कृतिक ,एवं आर्थिक स्थिति की जानकारी रखते हुए कक्षा शिक्षण में इस जानकारी का उपयोग करते हैं ?
2. क्या आप नियमित रूप से प्रशिक्षण एवं अकादमिक चर्चाओं में शामिल होकर सीखी गयीबातों का कक्षा शिक्षण में इस्तेमाल करते हुए सभी विद्यार्थियों को तनाव-रहित वातावरण में सीखने के अवसर देते हैं ?
3. क्या आप बच्चों के कक्षा कार्य एवं गृह कार्यों की जांच कर आवश्यक सलाह देते हुए सुधार करते हैं ?
4. क्या आप पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य सन्दर्भ सामग्री एवं सहायक सामग्री का इस्तेमाल कर अपनी शिक्षण प्रक्रिया पर चिंतन एवं आवश्यक सुधार करने का प्रयास करते हैं ?
5. क्या आप विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की आवश्यकताओं के अनुसार सहयोग एवं बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर स्थानीय परिस्थितियों का उपयोग कर शिक्षण करते हैं ?
6. क्या आप अपने अध्यापन में विभिन्न प्रविधियों जैसे अवलोकन, अन्वेषण- विश्लेषण, समस्या समाधान, आलोचनात्मक प्रतिक्रियाएं एवं निष्कर्ष निकालने जैसी विभिन्न प्रविधियों का इस्तेमाल करते हैं ?
7. क्या आप कक्षा में बच्चों को एक दूसरे से विचारों के आदान-प्रदान एवं आपसे प्रश्न पूछने की आजादी देते हैं ?
8. क्या आप अपनी कक्षा में बैठक व्यवस्था को लचीला रखते हुए आवश्यकतानुसार बदलते रहते हैं ?
9. क्या आप बच्चों के आकलन करते समय उनके पूर्व के आकलन को वर्तमान आकलन से, उनके व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुणों का आकलन एवं सुधार हेतु निरंतर उपाय एवं अन्य शिक्षकों से बच्चों की प्रगति के बारे में चर्चा करते रहते हैं ?
10. क्या आप विद्यालय के संसाधनों का अन्य विद्यालयों के संसाधनों के साथ शेयर करते हैं और आपने अन्य शिक्षकों के साथ मिलकर अपने अध्यापन में सुधार के लिए प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी का गठन किया है ?

सभी प्रतिभागियों को उपरोक्त दस बिन्दुओं पर अपनी स्थिति की समीक्षा करने का अवसर देवें | प्रत्येक बिंदु पर उनके अपेक्षित कार्यों पर सभी को सुझाव देकर बिन्दुओं को स्पष्ट करें एवं ऐसा करने से क्या फायदा होगा, इस पर भी सुझाव आमंत्रित करें | शिक्षकों व्दारा जिन-जिन बिन्दुओं पर स्वयं में कमी महसूस की जा रही है, उन बिन्दुओं पर उन्हें सुधार हेतु आत्म-चिंतन करने का अवसर देवें |

बच्चों की प्रगति का रिकार्ड एवं सुधार हेतु सतत प्रयास:

एक अच्छे शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की उपलब्धि पर सतत नजर रखते हुए उनमें सुधार के साथ-साथ अपने शिक्षण विधियों में भी सुधार कर परिणामों को बेहतर करने की दिशा में कार्य किया जाना चाहिए | कक्षा में कोई बच्चा पीछे नही छूटना चाहिए और सभी को एक दूसरे का सहयोग करते हुए सभी को आगे बढते जाना चाहिए | ऐसा करने हेतु शिक्षकों को कुछ नवाचारी तरीके अपनाने चाहिए ताकि प्रत्येक बच्चे का रिकार्ड आसानी से रखा जा सके | दुर्ग जिले के धमधा विकासखंड में सभी शालाओं में सभी बच्चों को विभिन्न दक्षताएं पूरी तरीके से आ जाएं और प्रत्येक बच्चे की सरल तरीके से ट्रेकिंग की जा सके, इसके लिए उन्होंने एक सरल सा प्रपत्र विकसित किया है | इस हेतु उन्होंने प्रत्येक कक्षा एवं विषय के लिए कुछ दक्षताओं का चयन किया है और उसके आगे उस दक्षता को कितने बच्चों ने हासिल कर लिया है, उस संख्या को लिखना होता हैं | उस दक्षता में जब तक पूरी कक्षा के बच्चे दक्ष नहीं हो जाते, उनके साथ सुधार कार्य सीधे शिक्षक व्दारा या अपने सहपाठियों के सहयोग से चलता रहता है |

दक्षताएं	दक्षता हासिल कर चुके कुल बच्चों की संख्या			
	तिथि 1	तिथि 2	तिथि 3	तिथि 4

दक्षताओं के उदाहरण हेतु एक नमूना:

विषय	**कक्षा - 1 ली**	**कक्षा - 2 री**	**कक्षा - 3 री**
हिंदी	1. सुनना व समझना 2. वर्णों की पहचान 3. मात्रा पर अभ्यास 4. बिना मात्रा वाले शब्द बनाना 5. शब्दों को जोड़कर पढना व लिखना 6. मात्राओं को वर्णों से जोड़कर शब्द बनाना 7. सरल शब्दों को पढना 8. लेखन अभ्यास बोलकर किया जाये	1. सुनना व समझना 2. वर्णों को जोड़कर पढना 3. वर्णों में मात्रा लगाकर पढ़ना 4. शब्द निर्माण (सार्थक-निरर्थक) 5. सरल वाक्य बनाना 6. काल्पनिक शब्दों से वाक्य बनाना 7. वाक्य सुधारना 8. पठन हेतु सामग्री उपलब्धता 9. लेखन हेतु पर्याप्त अवसर 10. पूर्व निर्धारित वर्णों से प्रारंभ होने वाले शब्द खोजना 11. बोलना व लिखना	1. विराम चिन्हों का प्रयोग 2. श्रुतलेख 3. कठिन शब्दों पर अभ्यास 4. पढने हेतु अधिक अवसर 5. परिवेशीय लिखी हुई वाक्यों को पढना व समझना 6. काल्पनिक कहानी 7. फिल्मो की घटना लिखना व त्रुटि सुधार 8. व्यक्तिगत परिचय 9. व्याकरण की प्रारंभिक परिचय 10. पाठ के अंत में दिए गए अभ्यास 11. पत्र व निबंध लेखन
गणित	1. अंकों का स्वतंत्र रूप से पहचान 2. पूर्व व पश्चात् संख्या को जानना 3. क्रमभंग से अंकों की पहचान 4. सरल रूप में जोड़ना – घटाना 5. गिनती सौ तक अंकों व शब्दों में लेखन अभ्यास	1. 1 से 100 तक अंकों की पहचान 2. पहाडा पर अभ्यास 3. प्रारंभिक गणितीय संक्रिया से परिचय व अभ्यास 4. अंक निर्माण की प्रक्रिया 5. समूहीकरण 6. अंकों व सापेक्ष सामग्री से शब्द सम्बन्ध बताना	1. गणितीय संक्रियाओ पर कार्य 2. हासिल वाले प्रश्न 3. इबारती प्रश्नों पर अभ्यास 4. पहाड़ा निर्माण 5. हजार तक की संख्या 6. दस हजार वाले संख्याओ पर अभ्यास 7. 2 से 15 तक पहाडा पर अभ्यास

		7. परिवेशीय बड़ी संख्या वाले वस्तुओ को गिनना 8. पहाड़ो को शब्दों में लिखकर अभ्यास	8. पाठ्यक्रम अनुसार पाठ्यचर्या निर्धारित कर अभ्यास 9. परिवेशीय वस्तुओं पर अभ्यास 10. गणितीय खेल 11. ज्यामितीय आकृतियों से परिचय
अंग्रेजी	1. वर्णों की पहचान 2. छोटे व बड़े अक्षरों के पहचान व लेखन अभ्यास 3. शब्दों को चित्र के रूप में पहचान 4. स्वर व व्यंजन अलग करने का अभ्यास	1. सरल शब्दों की पहचान 2. शब्द बनाना 3. परिवेशीय अंग्रेजी शब्दों की पहचान 4. पुस्तक द्वारा लेखन अभ्यास 5. One to Ten शब्दों में लिखना 6. रंगों के नाम 7. जानवर 8. फल आदि के नामो का चित्र के रूप में पहचान	1. सरल शब्दों को स्वतंत्र रूप से पढना 2. वर्णों को मिलकर शब्द बनाना 3. व्यक्तिगत परिचय अंग्रेजी में लिखना 4. अभ्यास व दैनिक उपयोगी अंग्रेजी शब्दों को पहचान 5. लेखन अभ्यास 6. स्पेलिंग त्रुटि सुधार पर अभ्यास 7. परिवेशीय अंग्रेजी में लिखे शब्दों पर अभ्यास 8. व्याकरण से परिचय
परिवेशीय ज्ञान "सामान्य ज्ञान" अभिव्यक्ति कौशल	1. रंगों के नाम 2. अपना नाम बोल व लिख पाना 3. शाला का नाम 4. कविता व कहानी बोल पाना 5. परिवेशीय वस्तुओं के नाम हिंदी व अंग्रेजी में बोल पाना 6. गणवेश , केश, पेन, कापी, बस्ता का उचित रखरखाव 7. स्वच्छता हेतु प्रेरणा 8. टायलेट ट्रेनिंग व कक्षा में शैक्षिक वातावरण 9. चित्रकारी व रेखाचित्र	1. 2 से 10 व तक पहाडा पर अभ्यास लेखन द्वारा 2. अपने परिवार के सदस्यों का नाम लिख पाना 3. कविता, कहानी, घटना बता पाना 4. सरल शब्दों का श्रुत लेख 5. अपने उपयोग की वस्तुओं का उचित रखरखाव 6. दीवार पर लेखन अभ्यास 7. वर्णों के आकार पर अभ्यास 8. हिंदी में बात करने की शैली का विकास 9. सीखे हुए चीजो का व्यावहारिक अनुप्रयोग	1. शैक्षिक तथ्यों का व्यावहारिक अनुप्रयोग 2. संबंधी, परिचय, अभिवादक, अनुमति, शिष्टाचार 3. तार्किक क्षमता का विकास 4. पैटर्न, आंकड़ो व प्रदर्शन, कहानी व चित्र निर्माण का स्पनिक 5. पहाड़ा पर नियमित अभ्यास 6. राष्ट्र के विकास में स्वंम की भूमिका का भाव लाना
पर्यावरण			1. विषय वस्तु को पढ़कर समझना 2. विषयवस्तु पर अभ्यास 3. ग्राम /राज्य/ राष्ट्र को समझना 4. भौतिक रूप में देश की स्थिति 5. राजनैतिक अवधारणा 6. ग्राम के सन्दर्भ में परिवेशीय

			त्यौहार 7. किसी घटना का विवरण 8. रहन – सहन, वस्तुओं पर अभ्यास
विषय	**कक्षा - 4 थीं**	**कक्षा - 5वीं**	
हिंदी	1. आरोह प्ररोह के साथ पढना 2. सुनकर समझना, काल्पनिक कहानी लिखना 3. सार्थक निरर्थक वाक्यों की पहचान 4. त्रुटि सुधार 5. पठन हेतु अधिक अभ्यास 6. लेखन द्वारा तर्क 7. अटकने वाले शब्दों पर अभ्यास 8. समाचार पत्र को पढ़ना 9. सीखे हुए शब्दों का लेखन में अभ्यास 10. पत्र लेखन 11. निबंध रचना 12. विषय वस्तु पर लिखना	1. आरोह प्ररोह के साथ पढना 2. श्रुतलेख 3. क्रमानुसार पढ़कर समझना व उसी क्रम से दोहराना 4. पढ़कर समझ विकसित करना 5. निबंध व पत्र लेखन 6. त्रुटि सुधार व्याकरण पर अभ्यास 7. प्रश्नों के उत्तर स्वंय से तैयार कर पाना 8. कल्पनाशक्ति का विकास 9. लेख लिख पाना 10. समसामयिक घटनाओं पर विचार रख पाना	
गणित	1. गणितीय संक्रियाओ पर स्वतंत्र रूप से अभ्यास 2. इबारती प्रश्न पाठ्यक्रम अनुसार अभ्यास समूह में कार्य करना 3. परिवेशीय तथ्यों का प्रयोग 4. सरल से कठिन की ओर सीखने का क्रम 5. गणितीय खेल 6. बड़ी संख्याओ पर अभ्यास 7. 2 से 20 तक पहाडा अभ्यास 8. वैदिक गणित का सीखने हेतु प्रयोग	1. पाठ्यक्रमानुसार संक्रियाओं पर अभ्यास 2. 2 से 10 तक पहाडा पर शब्दों में लेखन द्वारा अभ्यास 3. बड़ी संख्याओ पर अभ्यास 4. आंकड़ो का निरूपण पैटर्न 5. संख्याओ व संक्रियाओं का व्यावहारिक अनुप्रयोग 6. वैदिक गणित पर अभ्यास 7. पूर्व की कक्षाओं में किये गए अभ्यास का परीक्षण	
अंग्रेजी	1. पठन हेतु अभ्यास 2. पाठ्यपुस्तक में दिए गए शब्दों व वाक्यों को पढना 3. सरल शब्दों से वाक्य बनाना 4. अटक कर पढने वाले शब्दों को सुधार कार्य 5. व्याकरण व poem पर अभ्यास 6. दैनिक उपयोगी शब्दों पर अभ्यास	1. वाक्यों को पढकर समझ पाना 2. व्याकरणीय अभ्यास 3. स्पेलिंग अभ्यास 4. सार्थक निरर्थक शब्दों की पहचान 5. सीखे गए शब्दों का व्यावहारिक अनुप्रयोग परिवेशीय वस्तुओ एवं दैनिक प्रयोग में आने वाले	

		शब्दों पर अभ्यास	
परिवेशी य ज्ञान "सामान्य ज्ञान" अभिव्यक्ति कौशल	1. पहाडा का नियमित अभ्यास 2. काल्पनिक व समसायिकी घटनाओ पर निबंध लेखन 3. तार्किक क्षमता का विकास 4. समाचार पत्र वचन 5. कापी व स्वंय की वस्तुओ का रखरखाव 6. शिष्टाचार व वाक्य शैली पर अभ्यास 7. स्वंय को भविष्य में कि रूप में देखते हैं	1. समयसामयिकी घटना का ज्ञान व स्यवं का विचार 2. स्वंय की स्थिति का मूल्यांकन व किस दिशा में आगे बढ़ना चाहते हैं 3. अभिव्यक्ति कौशल विकसित करना 4. शिष्टाचार व अनुशासन हेतु स्वप्रेरित होना 5. सही व गलत की पहचान 6. व्यक्तित्व विकास 7. रहन सहन, पहनावा, बोलचाल में सीखे गए बातों को शामिल करना 8. स्वतन्त्र रूप से रुचिकर कार्य करना	
पर्यावरण	1. पाठ्यक्रम अनुसार परिवेशीय तथ्यों से जोड़ते हुये अभ्यास, छत्तीसगढ़ व भारत की राजनैतिक स्थिति पर अभ्यास 2. वैश्विक परिदृश्य की अभ्यास 3. परिवारिक स्थिति व रेखाचित्र 4. मानचित्र व सामान्य ज्ञान पर अभ्यास 5. पाठ्यक्रम अनुसार पाठ्य सहगामी सामग्री तैयार करना	6. पाठ्यक्रमानुसार सामग्री तैयार कर प्रदर्शन 7. पाठ्यक्रमानुसार पाठों पर अभ्यास 8. मानचित्र व राजनैतिक स्थिति पर अभ्यास 9. फसल आदि विषय वस्तु पर पाठ्यक्रम के अतिरिक्त पाठ्यचर्चा तैयार कर अभ्यास	

शिक्षकों का सतत क्षमता विकास

अपने प्रशिक्षण कक्ष में श्यामपट या प्रोजेक्टर में निम्नानुसार सारिणी तैयार कर विश्लेषण करते हुए स्थिति में सुधार हेतु आवश्यक रणनीति शाला स्तर पर मिलकर बनाएं एवं संबंधित अधिकारियों को सूचित कर उनके माध्यम से स्थिति में सुधार की दिशा में आवश्यक निर्देश एवं सहयोग प्राप्त करें और तब तक निरंतर मानिटरिंग एवं प्रयास करते रहें जब तक कि स्थिति सुधर न जाए-

#	कार्य	कुल शालाओं की संख्या	कितने में पालन हो रहा है ?	शेष में सुधार के लिए समय सीमा (माह)
1	शालाओं में समुदाय व्दारा शिक्षक उपस्थिति पर नजर रखी जाती है धानाध्यापकप्र ,व दारा अनुपस्थिति का रिकार्ड रखा जाता है और शिक्षक नियमित रूप से उपस्थित रहकर कक्षा अध्यापन करते हैं ।			
2	शिक्षकों की अनुपस्थिति की स्थिति में शाला में वैकल्पिक शिक्षक की व्यवस्था है।			

3	संकुल एवं विभिन्न स्तरों पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रधानाध्यापक शिक्षकों की उपस्थिति सुनिश्चित करता है ।			
4	प्रधानाध्यापक एवं संकुल समन्वयक अपने शिक्षकों की कक्षाओं का अवलोकन करते हैं और उन्हें सुधार हेतु आवश्यक सुझाव देते हैं ।			
5	शिक्षकों को आपसी सहमति से विभिन्न उत्तरदायित्व दिए जाते हैं और उन्हें अपना लक्ष्य स्वयं निर्धारित करने हेतु प्रेरित किया जाता है और उसे समय पर पूरा करने हेतु प्रेरित किया जाता है ।			
6	अध्यापकों को पाठ्यक्रम की आवश्यकताओं के अनुसार नियमित सपोर्ट एवं फ़ालो अप किया जाता है-			
7	विद्यार्थियों की उपलब्धि के आधार पर शिक्षकों की प्रदर्शन की समीक्षा एवं सुधार हेतु प्रयास किए जाते हैं ।			
8	शाला प्रबन्धन समिति के सदस्यों के साथ चर्चा कर शाला में गुणवत्ता सुधार की दिशा में कार्य करते हैं ।			
9	प्रशिक्षण में बताई गयी बातों पर साथी शिक्षकों के साथ चर्चा कर उनका कक्षा में उपयोग करने की दिशा में कार्य किया जाता है ।			
10	शाला में गुणवत्ता सुधार हेतु शिक्षकों को नवाचार करने हेतु प्रेरित किया जाता है ।			

बच्चों को सीखने के अवसर उपलब्ध कराना-

शाला में हमें पढ़ाने के अलावा बहुत से और भी कार्य करने होते हैं | चलो देखें कि एक सत्र में हमारी ड्यूटी कौन-कौन से कार्यों में लगाई जाती है ? अनुमानित दिनों के साथ कुल गैर-शिक्षकीय कार्य दिवस की सूची तैयार करें | आपको शाला में भी पढाई के अलावा और बहुत से कार्य जैसे रिकार्ड्स तैयार करना, जानकारी उच्च कार्यालयों में भेजना, मध्याह्न भोजन की तैयारी, विभिन्न दिवसों का आयोजन, पालकों से संपर्क, शाला प्रबन्धन समिति की बैठकों का आयोजन आदि आदि | इन सभी कार्यों के दौरान जब आप शाला से बाहर रहते हैं तो आपके विद्यार्थी क्या कर रहे होते हैं ? कौन उनके साथ काम कर रहा होता है ? क्या ऐसे समय में समुदाय से कोई आकर आपकी मदद कर सकता है ?

उपरोक्त मुद्दों पर प्रत्येक शिक्षक को अपनी अपनी स्थिति पर चिंतन करने के अवसर देने के बाद अब सभी मिलकर इस समस्या के हल के लिए उपाय खोजने हेतु ब्रेन-स्टोर्मिंग करने के अवसर देवें |

- जब हमें अध्यापन के अलावा अन्य कार्य करने होते हैं तब हम बच्चों को कैसे सक्रिय रख सकते हैं ?
- समुदाय के साथ किसी विषय पर सर्वे की जिम्मेदारी मिलते समय हम अपनी पालकों से मिलने, उनसे संपर्क करने वाली जिम्मेदारियों को कैसे निभा सकते हैं ?
- कौन-कौन सी ऐसी जानकारियाँ हैं जिन्हें आपको प्रतिवर्ष एकत्रित करना होता है ? प्रतिवर्ष संकलित की जाने वाली जानकारियों को पहले से संकलित कर कैसे रखा जा सकता है ?
- समुदाय में ऐसे कौन-कौनलोग हैं जो आपको ऐसे अवसरों में सहयोग देने हेतु कक्षा ले सकते हैं ?
- माताओं का उपयोग ऐसे समय में कैसे लिया जा सकता है ?

- जब हम कक्षा में नहीं हो रहे होते हैं तब उस समय में बच्चों को सक्रिय रखने हेतु कौन-कौन सी गतिविधि दी जा सकती है ? ऐसे कार्यों की विषयवार सूची तैयार करें | समय समय पर इसका उपयोग करें |
- बच्चों को लंबे अवकाश जैसे ग्रीष्मकाल के दौरान पढाई से जुड़े रहने हेतु क्या काम दिया जा सकता है ?
- बड़े बच्चों से या घर के बड़े लोगों से बच्चों को पढाई में सहयोग के लिए क्या किया जा सकता है ?
- बच्चे स्वयं होकर अपने मन से पढ़ें, ऐसा माहौल कैसे बना सकते हैं ?
- समुदाय में इच्छुक व्यक्तियों को शाला में सिखाने के काम से कैसे जोड सकते हैं ?

सभी के लिए शिक्षा- चित्र पर चर्चा

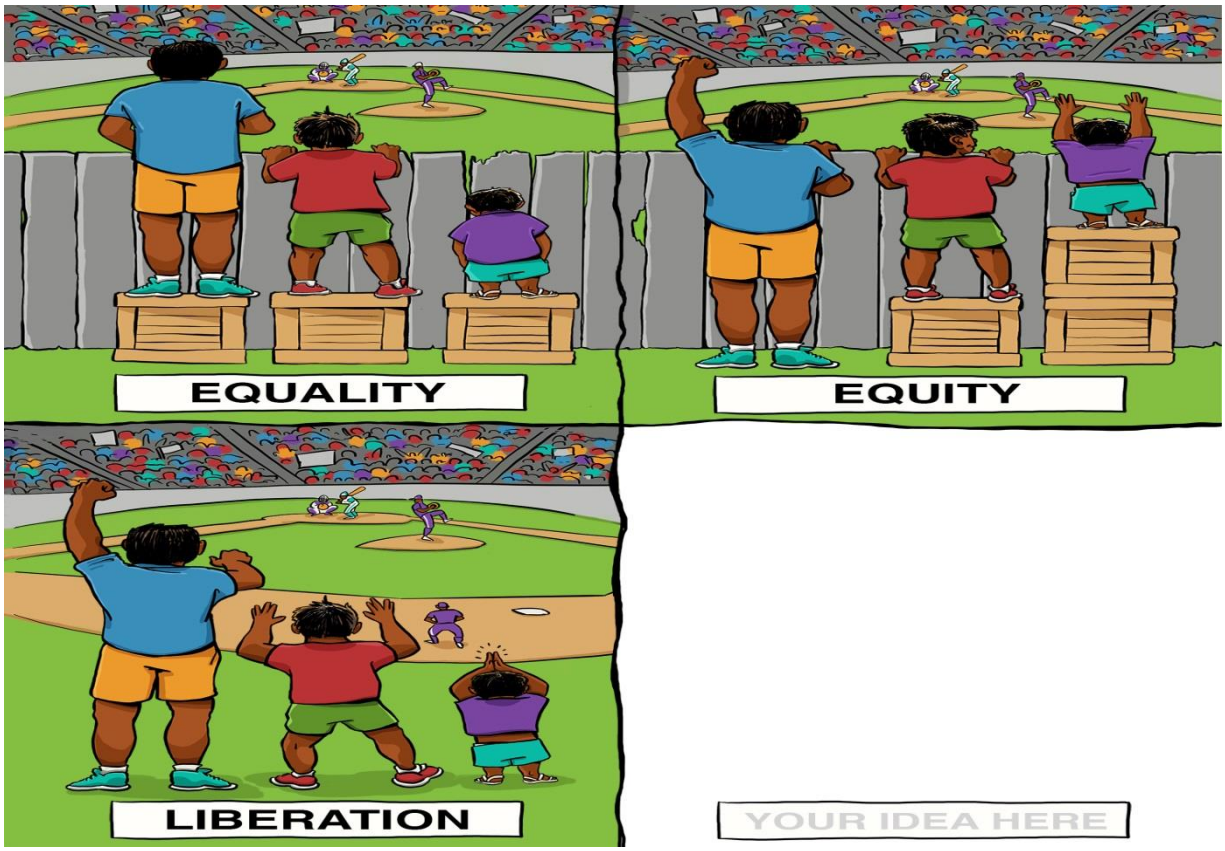

ऊपर के चित्र को सभी प्रतिभागियों को दिखाते हुए विवरण देवें | बच्चे खेल देखना चाहते हैं | उनके और मैदान के बीच में दीवार एक अवरोध के रूप में खडी है | पहले चित्र में सभी को एक जैसे सुविधा देते हुए देखने के अवसर दिए गए हैं | दूसरे चित्र में जिसको जितनी आवश्यकता है, उतनी सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है | तीसरे चित्र में दीवार रूपी अवरोध को ही हटा दिया गया है और बच्चे आसानी से खेल का मजा ले पा रहे हैं | हमारी कक्षाओं में इस प्रकार की विषमताओं को आप कैसे दूर करना चाहेंगे |

- कक्षा में व्याप्त विषमताओं, वर्ग, लिंग, दिव्यांग, सीखने के स्तर आदि को आप कैसे महसूस करते हैं, देखते हैं ?
- कक्षा शिक्षक के रूप में आप इन विषमताओं को कैसे दूर करने का प्रयास करते हैं ?

- विषमताओं को दूर करने हेतु क्या-क्या नवाचारी उपाय हो सकते हैं ?
- चर्चा कर अपनी अपनी शालाओं के लिए रणनीति निर्धारित कर कार्य प्रारंभ करें |

शाला विकास योजना एवं उसके अनुरूप शाला में कार्य –

- क्या आपकी शाला में आगामी तीन वर्षों के लिए शाला विकास योजना बनाई गयी है ?
- शाला विकास हेतु कौन-कौन सी प्रमुख गतिविधियाँ ली गयी हैं ?
- इन गतिविधियों में बच्चों में गुणवत्ता सुधार हेतु कौन-कौन सी गतिविधि ली गयी है ?
- क्या शाला विकास योजना की जानकारी सभी शिक्षकों एवं समुदाय को है ?
- क्या शाला में विकास हेतु आवश्यक संसाधन अन्य स्त्रोतों से भी लाने के प्रयास किए जा रहे हैं ?
- क्या विभिन्न कार्यों के लिए समय सीमा निर्धारित की गयी है और इनका पालन किया जाता है ?
- अपनी अपनी शाला के विकास योजना में क्या-क्या गतिविधि ली गई है और इनके सुधार हेतु क्या-क्या प्रयास किए जा रहे हैं, इन पर चर्चा करें |

प्रशिक्षण सत्र में एक बेहतर शाला विकास योजना का नमूना और समुदाय के साथ मिलकर कैसे इस योजना को तैयार किया जाए और इस योजना में क्या-क्या गतिविधियाँ ली जा सकती है, आदि पर विस्तार से समूह चर्चा करें |

शाला का अपना विजन एवं मिशन स्टेटमेंट-

कितनी शालाओं ने अपना अपना विजन स्टेटमेंट बना लिया है ? कृपया उसे शेयर करें |

अपने विजन के अनुरूप उसे प्राप्त करने हेतु क्या क्या प्रयास किए जा रहे हैं ?

जिन शालाओं ने अभी तक अपना विजन स्टेटमेंट नहीं बनाया है, वे किस दिशा में अपना विजन तैयार करना चाहते हैं ? विजन स्टेटमेंट कैसे बनाना चाहिए इसकी जानकारी हेतु चर्चा पत्र का पुराना माह 06/2016 का अंक देखें और प्रशिक्षण के दौरान साझा करें |

बच्चों में नागरिकता के गुणों का विकास-

किसी देश की पहचान उस देश के नागरिकों में नागरिकता के गुणों के पालन से होती है | विकसित देशों में लोग गाडी अपनी लाइन में चलाते हैं, सामने किसी को सड़क पार करते देखते हैं तो अपनी गाडी रोककर उसे जाने का समय देते हैं, यातायात के नियमों का पालन करते हैं, अपने आसपास बिलकुल भी गन्दगी नहीं करते, नियमों को बिलकुल भी नहीं तोड़ते आदि आदि |

क्या ऐसी नागरिकता के गुण हमें अपने आसपास दिखाई देते हैं ? हमारे आसपास ऐसे गुणों के न होने के क्या प्रमुख कारण हो सकते हैं ? चर्चा करें |

नागरिकों में नागरिकता के कौन-कौन से गुण अनिवार्यतः होने चाहिए ?

(कुछ गुण – अपने आसपास स्वच्छता बनाए रखना, सार्वजनिक स्थलों में लाइन में खड़े होकर नियम का पालन कर अपने काम करना, यातायात के नियमों का पालन, सार्वजनिक संपत्ति की देखभाल एवं उसे नुकसान न पहुंचाना, प्रदूषण न

फैलाना, अनावश्यक तेज हार्न न बजाना, अनावश्यक बिजली, पानी व्यर्थ न बहाना, शौचालय का इस्तेमाल, एक दूसरे का सम्मान, सार्वजनिक स्थलों में चित्र बनाना और गलत बातें न लिखना आदि आदि.....)

बच्चों में स्कूल के माध्यम से ऐसे गुणों का विकास कैसे करेंगे ? इन बातों को उनकी आदत में कैसे लाएंगे ?

कैसे उन्हें यह अहसास दिलाएंगे कि उपरोक्त सभी कार्य किया जाना उनकी अपनी जिम्मेदारी है ? ऐसा सोच पाना हम सबके लिए कैसे संभव हो सकेगा कि ऐसा करने से ही हमारे देश का सही दिशा में सही अर्थों में विकास हो सकेगा, हम सब पूरी दुनिया के सामने गर्व से अपने देश का नाम ले सकेंगे ?

एक शिक्षक के रूप में यदि हम अपने बच्चों में ऐसी संस्कृति एवं विचार सामने ला सकें तो इससे बढ़िया और कोई काम नहीं होगा | हम अपने देश को सुनहरे भविष्य की ओर ले जाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे |

तो सोचें कि हमारे सभी बच्चों में हम ये सब गुण कैसे विकसित कर सकेंगे ?

सुधार के लिए कुछ पहल

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान

छत्तीसगढ़ में प्रारंभिक शिक्षा में गुणवत्ता सुधार हेतु चार वर्षीय डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान गत वर्ष प्रारंभ किया गया है | इस कार्यक्रम में प्रतिवर्ष सबसे पहले सामाजिक अंकेक्षण कर लगभग एक तिहाई शालाओं को फोकस शालाओं के रूप में चिह्नांकित किया जाता है | फोकस शालाओं के चिह्नांकन हेतु 20 बिन्दुओं के रूब्रिक्स के माध्यम से समुदाय व्दारा शालाओं की रेटिंग की जाती है | एक सत्र में दो बार इन फोकस शालाओं का अकादमिक निरीक्षण किया जाता है और उनमे हो रहे सुधार का विश्लेषण किया जाता है | प्रथम अकादमिक निरीक्षण माह सितंबर के पूर्व एवं द्वितीय निरीक्षण माह जनवरी में संपन्न किया जाता है | इसके बीच की अवधि में शालाओं को अपने अपने कमजोर क्षेत्रों में सुधार के लिए अवसर दिए जाते हैं |

इस चार वर्षीय कार्यक्रम का वर्षवार फोकस इस प्रकार है:

1. प्रथम वर्ष –2015-16: शालाओं का आकलन सौ बिन्दुओं के चेक लिस्ट के आधार पर
2. द्वितीय वर्ष – 2016-17: कक्षाओं के आकलन रिपोर्ट कार्ड के माध्यम से दस दक्षताओं पर कक्षा की स्थिति
3. तृतीय वर्ष – 2017-18: प्रत्येक बच्चे की प्रगति के रिकार्ड हेतु उपलब्धि परीक्षण
4. चतुर्थ वर्ष –2018-19: चार वर्षीय कार्यक्रम की प्रभाविता देखने हेतु शाला का समग्र मूल्यांकन

उपरोक्त से यह स्पष्ट है कि यदि शालाएं शुरू से इस कार्यक्रम के लिए बताए जा रहे सभी बातों को ध्यान में रखकर उन पर अमल करेगी तो अगले वर्ष होने वाले प्रत्येक बच्चे के उपलब्धि परीक्षण में वे अच्छा प्रदर्शन कर पाएंगी | इस हेतु आपको अभी से ध्यान देना होगा | इस कार्यक्रम में सुझाए जा रहे विभिन्न गतिविधियों पर अमल करना होगा | आपस में चर्चा करें कि किस प्रकार से आप सभी मिलकर कैसे इस कार्यक्रम के अंतर्गत बच्चों की उपलब्धि में सुधार ला सकते हैं |

प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी

शिक्षकों को एक दूसरे से सीखने एवं सीखी एवं खोजी हुई बातों को एक दूसरे के साथ साझा करने हेतु राज्य में प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी की परिकल्पना की गई है | प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी का प्रचलन अमेरिका के स्कूलों में प्रायः दिखाई

देता है | हमारे राज्य में हम एक संकुल को न्यूनतम इकाई मानते हुए उसके अंतर्गत कार्य करने वाले शिक्षकों को अपनी अपनी रूचि एवं विशेषज्ञता के अनुसार अलग-अलग प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी बनाने के सुझाव दिए गए हैं | धीरे-धीरे ये कम्युनिटी अपने संकुल से बाहर निकलकर विकासखंड एवं जिलों के बाहर भी अपना विस्तार करते जा रहे हैं | राज्य स्तर से भी अनेक पीएलसी व्हाट्सएप्प समूह के माध्यम से जुड़े हैं और निरंतर अपने कार्यों को साझा करते रहते हैं | तकनीकी के आ जाने से अब हम विभिन सोशियल मीडिया के माध्यम से देश-विदेश के विशेषज्ञों के साथ भी सीधे जुड़ सकते हैं | प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी का गठन करते समय इन बातों को ध्यान में रखना चाहिए –

ऐसी कम्युनिटी के गठन करते समय कुछ सक्रिय शिक्षक आपस में मिलकर इस कम्युनिटी के उद्देश्य एवं मिशन तय करें
इसका उद्देश्य किसी विषय शिक्षण, कक्षा शिक्षण में सुधार, किसी विशेष कला या अन्य किसी रूचि के क्षेत्र में मिलकर कार्य करना हो
सदस्यों की संख्या के विस्तार के समय कम्युनिटी अपने उद्देश्य एवं नियम स्पष्ट रूप से शेयर करें
नियमित बैठक के लिए स्थान एवं अन्तराल आदि का निर्धारण करें | दूर रहने वाले सदस्यों को इससे छूट दी जा सकती है
सोशियल मीडिया में कम्युनिटी के विषय से संबंधित मुद्दों पर ही पोस्ट किया जाना तय करें
अनावश्यक पोस्ट से सभी सदस्यों का समय जाया न करें और हमेशा उपयोगी चीजें ही पोस्ट करें
कक्षा में हो रहे सार्थान अनुभवों को साझा कर अपने साथियों के लिए उपयोगी सूचनाएं उपलब्ध कराएं
किसी एक घटना के बहुत सारे फोटो न भेजें इससे सामने वाले को समस्या हो सकती है
राज्य में विभिन्न जिलों में बहुत से प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी बेहतर कार्य कर रहे हैं और अच्छी अच्छी जानकारियाँ आपस में शेयर कर रहे हैं | सृजन परिवार छत्तीसगढ़, पेडागोजी सीजी, सीएसी धमधा, बस्तर गुणवत्ता अभियान, आरटीई वाच परिवार, अभनपुर टून मस्ती, जिला पीएलसी ग्रुप दंतेवाडा, बैतलपुरिहा ज्ञानी, डीपीओ मुंगेली, सीएसी रायगढ़, Science MT Group Korea और न जाने कितने समूह अपने अपने क्षेत्र में सक्रिय होकर काम कर रहे हैं |

छोटे समूहों के साथ कार्य (Working with small groups)

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत बच्चों को छोटे-छोटे समूहों में बिठाकर कार्य करने पर जोर दिया गया है | इस प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न गतिविधियों का आयोजन समूह बनाकर किए जाने का अनुभव आपको प्राप्त हो गया होगा | कक्षाओं में समूह कार्य से बच्चों को सक्रिय रहने, प्रोत्साहित होने, आपस में संवाद करने, निर्णय लेने का कौशल विकसित किया जा सकता है | लेकिन बिना किसी योजना के समूह बनाने से सोचे गए काम में असफलता, शिक्षकों एवं बच्चों में निराशा एवं समय की बर्बादी हो सकती है | इसलिए समूह तैयार करने हेतु निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना होगा-

समूह बनाने की तैयारी – ध्यान से इस बारे में सोचें कि बैठक व्यवस्था कैसी होगी ? बच्चों के समूह बनाते समय उन्हें कहाँ बिठाया जाएगा ? क्या एक दूसरे की आवाज से कक्षा की गतिविधि में विघ्न तो नहीं आएगा ? बच्चों को समूह बनाते समय कौन से नियमों का पालन करना होगा, इसकी जानकारी भी होनी चाहिए, निर्देश स्पष्ट होने चाहिए |

अपने शिक्षण के उद्देश्य का निर्धारण स्पष्ट रूप से करें जिसके आधार पर समूह में बच्चे आसानी से एक दूसरे से सीख सके | इस बात का भी परीक्षण कर लेवें कि आपके इस गतिविधि में एक दूसरे से सीखने के अवसर देने से फायदा होगा या केवल समय की बर्बादी होगी | समूह कार्य को सफल बनाने के लिए समूह से अपेक्षित कार्यों को कुछ हद तक चुनौतीपूर्ण बनाया जाना होगा |

किसी समूह के सदस्यों को समूह को दिए गए कार्य की जिम्मेदारी, एक दूसरे पर परस्पर निर्भरता और समूह में महत्वपूर्ण भूमिका देनी चाहिए ताकि सभी सक्रिय रहें और उन्हें अपने महत्व का भी अहसास हो | समूह में कुछ भूमिकाएं जैसे रिकार्डर, प्रवक्ता, टाइमकीपर, लीडर, अन्य समूहों के साथ समन्वय करने वाला जैसी जिम्मेदारियां दी जा सकती है |

इसके बाद एक समूह में बच्चों की संख्या एवं कुल समूहों की संख्या भी आपको निर्धारित करनी होगी | यह मुख्यतः कार्य की प्रकृति, प्रकार के साथ साथ बच्चों की संख्या, कक्षा का आकार एवं अन्य कुछ मुद्दों पर निर्भर करता है |

अलग-अलग समूहों में बच्चों को बांटते समय उनकी पृष्ठभूमि, रूचि, क्षमता, लिंग, सहभागिता के स्तर जैसे विभिन्न मुद्दों को ध्यान में रखना चाहिए |

समूह में कार्य के लिए समय का निर्धारण करते समय कार्य की प्रकृति के आधार पर अनुमान लगाते हुए समय देना होगा | समूह कार्य में सभी समूहों के कार्यों के प्रदर्शन के लिए भी समय निकलना होगा |

समूह कार्य में व्यक्तिगत के अलावा जोड़ी में , छोटे-छोटे समूहों में, माध्यम साइज एवं बड़े साइज के समूह तैयार किए जा सकते हैं | कार्य की प्रकृति के आधार पर दो से लेकर बड़ी संख्या तक के सदस्य एक समूह में रखे जा सकते हैं | गतिविधियों का आयोजन व्यक्तिगत, जोडी, छोटे समूह, बड़े समूह और पूरी कक्षा तक हो सकता है |

समूह कार्य में समय की पाबंदी, अनुशासन एवं आवश्यक सामग्री का अपने पास होना अनिवार्य है | अपने निर्देशों को सभी को अच्छे तरीके से स्पष्ट करें ताकि समूह कार्य में कोई शंका न हो और काम समय पर सफलतापूर्वक पूरा हो सके | समूह के सभी सदस्यों को अंतिम लक्ष्य के बारे में अच्छे से पूरी जानकारी होनी चाहिए | यदि किसी प्रकार की कोई शंका हो तो सदस्यों को प्रश्न पूछने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए |

समूह कार्य की मानिटरिंग के लिए बीच बीच में घूमकर समूहों को कार्य करते हुए देखें | स्वयं से होकर सहायता से बताने का प्रयास न करते हुए समूह के सदस्यों को स्वयं समस्या का हल ढूँढने का अवसर देवें | अपने विद्यार्थियों के क्षमता पर भरोसा रखें | अपनी भूमिका एक सुविधादाता की रखें न कि सब कुछ बताने वाले शिक्षक की |

आयोजन के आगे

हम लोग आयोजनों में विश्वास करते हैं | किसी भी विशेष दिन को बेहतर तरीके से आयोजन करने में हमारी बहुत सी शक्ति लग जाती है | कहीं हम विभिन्न आयोजनों के लिए प्रबन्धक मात्र बन कर तो नहीं रह जा रहें हैं ? Event Manager?

गत कुछ माहों में हमने कितने कार्यक्रमों का आयोजन किया है ? क्या हम इन कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों के विकास सही अर्थों में कर पा रहे हैं ? इन कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों का सर्वांगीण विकास कैसे किया जा सकता है ? कुछ उदाहरण दें |

क्या केवल आयोजन कर किसी कार्यक्रम की परिणिती कर देनी चाहिए या उससे आगे भी बढ़ना चाहिए ?

उदाहरण के लिए हमने डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत माताओं का उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया | इस कार्यक्रम के माध्यम से हमने माताओं को शाला से जोड़ने एवं उनके माध्यम से बच्चों की उपलब्धि में सुधार के बारे में सोचना शुरू किया | आप सभी के सक्रिय सहयोग एवं पहल से इस कार्यक्रम को बहुत सराहना मिली एवं बहुत बड़ी संख्या में माताओं का शाला से जुड़ाव शुरू हुआ | क्या माताओं के उन्मुखीकरण कार्यक्रम का उद्देश्य मात्र माताओं को शाला तक लाने से था ? क्या केवल ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन मात्र एवं भीड़ इकठ्ठा करना मात्र हमारा उद्देश्य है ?

सभी माताओं को शाला ला सकने के लिए आप सभी को बहुत बहुत बधाइयां ! अब इसके आगे हमें माताओं को अपने बच्चों को घर में पढ़ने में सहयोग देने, उनसे प्रतिदिन शाला में हुई पढाई, उनके गृह कार्य, पुस्तकों में किए गए कार्य, समय पर साफ़-सुथरे शाला नियमित भेजना, शिक्षकों से मिलकर अपने बच्चे की प्रगति की जानकारी, कमजोर पढाई की स्थिति में शिक्षकों के साथ मिलकर स्थिति में सुधार के प्रयास आदि में सक्रिय सहभागिता की दिशा में सोचने का काम करना करें ताकि प्रारंभ हुए इस कार्यक्रम को सिस्टम में स्थायित्व एवं नियमितता, निरन्तरता मिल सके |

कक्षा में अनुशासन और प्रोत्साहन

- बच्चों को स्कूल में प्रोत्साहित करने हेतु क्या क्या तरीके हो सकते हैं ?
- क्या हम गलती से या जान-बूझकर कुछ बच्चों के साथ अलग प्रकार का व्यवहार करते हैं ? यदि ऐसा करते हैं तो क्या नुकसान हो सकता है ?
- क्या शिक्षक का व्यवहार भी बच्चों के शाला त्याग का कारण बन सकता है ?
- बच्चों के पालकों के साथ क्या आप बच्चों के बारे में चर्चा करते हैं ?
- ऐसे कौन-कौन सी गतिविधियाँ हैं जिनसे बच्चों को उनके अन्दर छिपी प्रतिभा को बाहर लाने का अवसर मिल सकता है ?
- बच्चों की कोर दक्षताएं जान लेने के बाद उनके विकास हेतु आप क्या कर पाते हैं ? ऐसे कुछ उदाहरण शेयर करें |
- कक्षा में अनुशासन बनाए रखने हेतु कौन-कौन से तरीकों को अपनाया जा सकता है ?

जिलों व्दारा किए जा रहे कुछ नवाचार

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत जिला प्रशासन और शिक्षक दोनों विभिन्न नवाचारी गतिविधियों का आयोजन कर शालाओं में बेहतर माहौल बनाने का प्रयास कर रहे हैं | इनमे से कुछ है –

सुकमा – ज्ञानोदय शिक्षा परिसर- माओवाद की वजह से पढाई छोड़ चुके शाला त्यागी बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने अभिनव पहल

दंतेवाडा- पढ़े दंतेवाडा लिखे दंतेवाडा – बच्चों के पढने-लिखने पर फोकस कर शिक्षा में सुधार

बस्तर – पालक-बालक सम्मेलन – पालकों को शाला में आमंत्रित कर शिक्षकों एवं पालकों का संवाद

कोरिया- शाला सौन्दर्यीकरण - शाला के बाउंड्रीवाल को बच्चों के सहयोग से आकर्षक बनाना

बालोद- बस्ता-विहीन शिक्षा की ओर – बच्चों को बस्ते के बोझ से मुक्ति दिलाने की दिशा में अग्रसर

बलौदाबाजार- प्रशिक्षकों का स्क्रीनिंग के माध्यम से चयन –प्रशिक्षकों के चयन के लिए कैम्प आयोजित कर कुशल प्रशिक्षकों की पहचान

सरगुजा – एजुट्रेक के माध्यम से मानिटरिंग – शिक्षकों एवं बच्चों की उपस्थिति हेतु मोबाइल एप्प – एजुट्रेक के माध्यम से मानिटरिंग

दुर्ग- लैका मडई – बच्चों को शाला से जोड़ने एवं उनमे छिपी प्रतिभा को निखारने

कांकेर – शैक्षिक वीडिओ के माध्यम से पढाई – प्रज्ञा एवं सेतु नामक वीडियोज में माध्यम से कक्षा शिक्षण

नारायणपुर – कोमिक स्ट्रिप के माध्यम से पढाई – उच्च प्राथमिक कक्षाओं में कोमिक स्ट्रिप के माध्यम से स्थानीय भाषा में पढाई

सूरजपुर – परख – संकुल समन्वयकों के दल व्दारा शालाओं की सघन मानिटरिंग कर सुधार में सहयोग

जशपुर – कहानी सुनाना – स्थानीय लोगों व्दारा कहानी सुनाकर बच्चों को शाला के प्रति आकर्षण

बलरामपुर – कोसमोस – शिक्षकों एवं बच्चों की उपस्थिति हेतु बायोमैट्रिक उपस्थिति

बीजापुर – Introduction to Basic Technology (IBT)- बच्चों को विभिन्न कामों का अनुभव दिलाना

गरियाबंद – सेल्फी से मानिटरिंग – शाला में जो भी करने के निर्देश हों उसके हो जाने पर उसके साथ सेल्फी भेजना | उदाहरण के लिए सेल्फी विथ रीडिंग कार्नर

महासमुंद – ज्ञान उत्थान अभियान – बच्चों में गुणवत्ता लाने हेतु अतिरिक्त शिक्षण व्यवस्था

रायपुर – मोबाइल शिक्षक – विषयवार शिक्षकों की कमी को दूर करने मोबाईल शिक्षकों का एक दल व्दारा विभिन्न शालाओं में भ्रमण कर अध्यापन कार्य में आवश्यक सहयोग

इस प्रशिक्षण के आगे क्या ?

इन चार दिनों में सीखी गयी बातों, चर्चा से तय किए गए रोडमैप के आधार पर आप अपनी शाला में आगामी अकादमिक मानिटरिंग एवं अगले वर्ष प्रत्येक बच्चे के उपलब्धि में सुधार हेतु क्या क्या कार्यवाहियाँ करेंगे, इस पर विस्तार से चर्चा करवाएं | तय की गयी मुख्य बिन्दुओं को नीचे लिखें ताकि बाद में फोलो-अप किया जा सके -

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान छत्तीसगढ़ 2016-17

शालाओ में माह जनवरी 2017 में प्रस्तावित द्वितीय अकादमिक निरीक्षण के दौरान पुनः कक्षावार इन्ही दस दक्षताओं को आधार मानकर प्रश्न पूछे जायेंगे -

#	दक्षताएं
1	बच्चे कक्षानुरूप अंग्रेजी/संस्कृत में किसी निर्देश को सुनकर उसके अनुरूप कार्य कर सकेंगे | (Listening)
2	बच्चे कक्षानुरूप अंग्रेजी/ संस्कृत में किसी दिए गए बिंदु पर अपनी बात स्वतंत्र रूप से कह पाते हैं/ कोई कविता सुना पाते हैं | (Speaking)
3	बच्चे कक्षानुरूप अंग्रेजी/ हिन्दी/ संस्कृत में किसी दी गयी सामग्री को पढ़ कर सुना सकेंगे | (Reading)
4	बच्चे कक्षानुरूप अंग्रेजी/ हिंदी में कोई प्रदत्त कार्य लिखकर दिखा सकेंगे | (Writing)
5	बच्चे कक्षानुरूप सरल मौखिक गणितीय प्रश्नों के जवाब दे सकेंगे | (Oral Math)
6	बच्चे कक्षानुरूप गणितीय संक्रियाओं को हल कर सकेंगे | (Math Operations)
7	बच्चे कक्षानुरूपआसपास की दैनिक घटनाओं/ प्रक्रियाओं के संबंध में जानकारी दे सकेंगे | (Science around us)
8	बच्चे कक्षानुरूप वैज्ञानिक अवधारणाओं की समझ वाले सवाल हल कर सकेंगे | (scientific concepts)
9	बच्चे कक्षानुरूप सामाजिक अध्ययन से संबंधित प्रश्नों के जवाब दे सकेंगे | (General awareness)
10	बच्चे मिलजुलकर टीम वर्क के रूप में एक समूह में काम करते हुए किसी समस्या को हल कर लेते हैं (Team work)

हमारी शाला और हमारे बच्चे इसके लिए तैयार हैं !
हम भी पूरी तरह से तैयार हैं !

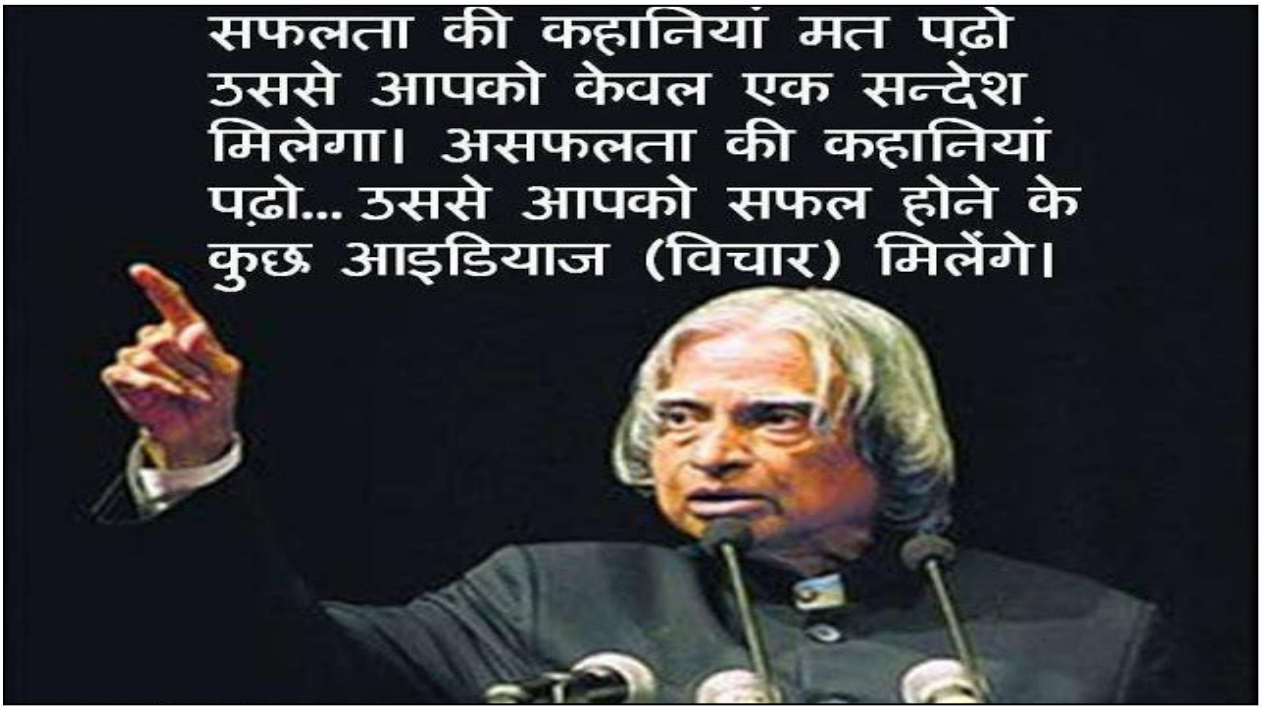

राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद, छत्तीसगढ़
सर्व शिक्षा अभियान, छत्तीसगढ़

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें